RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2021
Posted at Shantivan P.O. Dt. 17 to 20 of Each Month

# शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष-10, अंक-10, हिन्दी (मासिक), अक्टूबर 2023, पृष्ठ 16, मूल्य- 12:50

# हर नारी बन सकती है दुर्गा का 'शक्ति रूप'!

## ■ नारी के शक्ति स्वरूप की महिमा को साकार कर रही है ब्रह्माकुमारीज़

## ■ नारी शक्ति द्वारा संचालित विश्व का एकमात्र सबसे बड़ा संगठन

**शिव आमंत्रण, आबू रोड।** हर नारी चाहे तो मां दुर्गा के समान शक्ति रूप बन सकती है। जरूरत है तो उसे अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचान कर जगाने की। अपने शक्ति स्वरूप को जागृत करने की। प्रत्येक आत्मा अपने मूल स्वरूप में शक्ति स्वरूप है। लेकिन जन्म-मरण के चक्कर में आते-आते आत्मा अपना स्वधर्म भूल गई और आज देह अभियान के आवरण में खुद के शक्ति स्वरूप को विस्मृत कर दिया है। आत्मा के परमपिता सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव से संबंध जोड़कर आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज कर सकते हैं। परमात्मा इस धरा पर आकर यह विधि सिखा रहे हैं।

### शक्ति का आह्वान...

शक्ति, ऊर्जा, ताकत, बल। संपूर्ण ब्रह्मांड शक्ति (एनर्जी) से ही चल रहा है। जीवन को उच्च गुणवत्तापूर्ण जीने के लिए मुख्य पांच शक्तियों का संतुलन और समन्वय जरुरी है- शारीरिक शक्ति, मानसिक शक्ति, अर्थ शक्ति, आत्मिक शक्ति और परमात्म शक्ति। हम शारीरिक शक्ति और अर्थ शक्ति को पाने में इतने मशगूल हो गए हैं कि बाकी तीन शक्तियों को भुला बैठे हैं। कुछ लोग मानसिक शक्ति बढ़ाने का प्रयास करते हैं लेकिन जीवन के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण है, जिसके ऊपर नींव खड़ी है और आधार स्तंभ है- आत्मिक और परमात्म शक्ति, उसे बढ़ाने, अर्जित करने, संभालने की ओर हमारा ध्यान नहीं है। जब हमें आत्मिक शक्ति की पहचान हो जाती है, उसे जागृत करने की विधि जान लेते हैं तो परमात्म शक्ति वरदान के रुप में स्वत: मिल जाती है। आत्मिक शक्ति, मानसिक शक्ति और परमात्म शक्ति का एक-दूसरे से गहरा संबंध है। जब जीवन में ये तीनों पक्ष अपने मूल स्वरुप को प्राप्त करते हैं तो अर्थ शक्ति हमें गॉड गिफ्ट के रुप में प्राप्त हो जाती है।

### दिव्यता का आह्वान...

हर वर्ष नौ दिन शक्ति की भक्ति में हम व्रत के साथ नियम-संयम और पूरे मनोभाव व संकल्प से जागरण, तप-आराधना-ध्यान करते हैं। क्योंकि विधि से ही सिद्धी मिलती है। यहां खुद से सवाल करना जरुरी है कि यदि नवरात्र में नौ दिन आदि शक्ति की आराधना में नियम-संयम से चल सकते हैं तो जीवनभर क्यों नहीं? नौ दिन में मातारानी खुश हो सकती हैं तो यदि जीवन ही उनके समान दिव्यता संपन्न बना लें तो क्या उनका स्वरुप नहीं बन सकते? हम दैवी की महिमा में जगराते, आराधना करते, उनके गुणों और शक्तियों की महिमा गाते लेकिन इस बारे में भी विचार किया है कि क्या हम उनके समान अपने जीवन में दैवीगुण धारण नहीं कर सकते हैं? क्या हम भी उनकी तरह जीवन को शक्ति से परिपूर्ण नहीं बना सकते? क्या हमारा जीवन भी दैवी की तरह पवित्र नहीं हो सकता? क्या हम भी लेवता से देने वाले अर्थात् देव स्वरुप स्थिति को प्राप्त नहीं हो सकते? बचपन से मांगना हमारा संस्कार बन गया है। मुझे प्रेम चाहिए, स्नेह चाहिए, सम्मान चाहिए। इसकी जगह क्या हम देव स्वरुप स्थिति अर्थात् देने वाले, प्रेम स्वरुप अर्थात् प्रेम देने वाले, स्नेह स्वरुप अर्थात् स्नेह देने वाले। सम्मान देने वाले। जब जीवन में देने का भाव प्रकट होता है तो देवताई संस्कार अपने आप इमर्ज होने लगते हैं। क्योंकि देना ही लेना है। जब जीवन देवियों की तरह गुणवान और पवित्र बन जाता है तो शक्तियों का जागरण होने लगता है।

### आखिर नवरात्र ही क्यों?

रात्रि अर्थात् अज्ञान, अंधकार, कालिमा, बुराइयां, आसुरीयता। नवरात्रि के साथ जुड़े 'नव' शब्द का अर्थ है नवीनता, नया, नई शुरुआत, शुद्ध-पवित्र। अंकों में इसे नौ भी कहते हैं। इसलिए नवरात्रि में नौ देवियों का गायन है। नवरात्रि अर्थात् अपने अंदर जो बुराइयां रुपी असुर और आसुरीयता घर कर गई है उसे नव संकल्प के साथ, नई शुरुआत के साथ जीवन में दिव्यता-पवित्रता का आह्वान करना। जगराता अर्थात् अपनी शक्तियों का जागरण करना। देवियों को आदि शक्ति, शिव शक्ति भी कहा जाता है। कालांतर में शक्तियों ने भी योगबल से शिव से शक्ति प्राप्त की थी, इसलिए इन्हें शिव शक्ति भी कहते हैं। श्रीमद्भागवत गीता में लिखा है कि ब्रह्मा की रात्रि, ब्रह्मा का दिन। सतयुग और त्रेतायुग है ब्रह्मा का दिन और द्वापर, कलयुग है ब्रह्मा की रात है। जब संसार में अज्ञानता की रात्रि छा जाती है तो ऐसे समय पर ही परमात्मा भी संसार में शक्तियों की उत्पत्ति करते हैं, जिससे अंधकार, अज्ञानता समाप्त हो जाती है और मनुष्य जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैल जाता है।

शांतिवन में दादी की 16वीं पुण्यतिथि पर विशाल रक्तदान शिविर आयोजित

# राष्ट्रपति ने पुण्यतिथि पर राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के नाम जारी किया डाक टिकट

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।** ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 16वीं पुण्यतिथि 140 देशों के सेवाकेंद्रों पर विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में दादी के नाम डाक टिकट जारी तो देश के सेवाकेंद्रों पर रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। साथ ही दादी की याद में सामाजिक सेवा कार्य किए गए। मुख्यालय में आयोजित श्रद्धांजली कार्यक्रम में अयोध्या से संत-महात्माओं ने भाग लिया। दादी ने 50 साल तक ब्रह्माकुमारीज़ की बागडोर संभाली और संस्थान की सेवाओं को विश्वभर में पहुंचाया।

**140**
देशों में विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई पुण्यतिथि

**8000**
सेवाकेंद्रों पर दादी को अर्पित की श्रद्धांजली

### 510 यूनिट रक्तदान, युवा से लेकर बुजुर्गों ने दिखाया उत्साह

शांतिवन के डायमंड हाल में विशाल रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। इसमें 510 यूनिट रक्तदान किया गया। शिविर में ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रामा सेंटर आबू रोड, महाराणा भूपाल शासकीय मेडिकल कॉलेज उदयपुर और रोटरी इंटरनेशनल क्लब आबू रोड का सहयोग रहा। इसमें से 170 यूनिट ब्लड उदयपुर मेडिकल कॉलेज के लिए भेजा गया। रेवदर विधायक जगसीराम कोली ने पहुंचकर सभी का उत्साह

### देशभर से पहुंचे 18 हजार लोगों ने अर्पित की दादी को पुष्पांजली

पुण्यतिथि पर राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि को श्रद्धांजली अर्पित करने के लिए देशभर से 18 हजार लोग पहुंचे। लोगों ने लाइन में लगकर दादी को अपनी भावभीनी पुष्पांजली अर्पित की। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, महासचिव बीके निर्वैर भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके मुन्नी दीदी, प्रयागराज से पधारीं मनोरमा दीदी सहित वरिष्ठ बीके भाई-बहनों ने प्रकाश स्तंभ पर पहुंचकर पुष्पांजली अर्पित की।

## 'दादी ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच अध्यात्म का संदेश दिया'

**दिल्ली।** राष्ट्रपति भवन में आयोजित डाक टिकट उद्घाटन समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि आज से 16 वर्ष पूर्व 25 अगस्त 2007 को दादी प्रकाशमणिजी का देहावसान हुआ था। आज उनके नाम पर डाक टिकट जारी करके हम उन्हें श्रद्धांजली दे रहे हैं। चंद्रयान-3 की सफलता ने भारत को विश्व में एक नए मुकाम पर पहुंचा दिया है। हमारे वैज्ञानिकों ने भारत का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। दादी प्रकाशमणिजी चार दशकों तक ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका रहीं। उनके मार्गदर्शन में ही संस्था छोटे से रूप से विश्वस्तर पर पहुंची। ऐसी शक्तिशाली आत्मा ही दूसरों को सशक्त बना सकती है। मनुष्य को उसकी आत्मिक शक्ति का अहसास कराना एक महान कार्य है। उनका नाम ही था प्रकाशमणि। प्रकाश का मतलब ही है जगाना। उन्होंने आध्यात्म का प्रकाश पूरे विश्व में फैलाया। दादी ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच भी लोगों को अध्यात्म का संदेश दिया और ब्रह्माकुमारी परिवार के साथ खड़ी रहीं। आज उनकी पुण्य स्मृति पर डाक टिकट जारी करते हुए बेहद प्रसन्नता हो रही है।

केंद्रीय संचार राज्यमंत्री देवु सिंह चौहान ने कहा कि दादी के बारे में बताना मतलब सूरज को दीया दिखाना है। दादी चीफ होते हुए भी कहती थीं कि हेड नहीं समझना चाहिए। हेड समझने से हेडक होती है। डाक टिकट के माध्यम से डाक विभाग दादीजी के लिए एक छोटी सी श्रद्धांजली दे रहा है। अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई, ओआरसी की निदेशिका बीके आशा दीदी ने शॉल पहनाकर राष्ट्रपति का सम्मान किया गया। दादीजी के जीवनी पर बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया।

# आदर्श जीवन जीने वाला इस धरती का प्रत्येक व्यक्ति हिंदू है: जगतगुरु

## विश्व बंधुत्व दिवस: शिक्षा प्रभाग के राइस कैंपेन के नए प्रोजेक्ट की संतों ने की लांचिंग

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।**

शांतिवन परिसर के डायमंड हॉल में विश्व बंधुत्व दिवस को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें अयोध्या से आए संत, महामंडलेश्वर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए शिक्षा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे राइस कैंपेन के तहत नेशनल एजुकेशन कैंपेन की लांचिंग की।

अयोध्या से आए अंतरराष्ट्रीय श्रीराम कथा एवं श्रीमद भगवत कथा प्रवक्ता जगतगुरु रामानंदाचार्य श्रीरामदिनेशाचार्य महाराज ने कहा कि त्याग, पवित्रता और समर्पण की त्रिवेणी ब्रह्माकुमारीज़ में बह रही है। आज यहां इतने पुष्प दिखाई दे रहे हैं जो अध्यात्म के उस शिखर पर जाकर बिखर चुके हैं जिनकी सुंगध भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में प्रसारित हो रही है। जब इतने संसाधन और व्यवस्थाएं नहीं थीं तब दादीजी ने स्वयं को स्वर्ण की भांति तपाया है। जगतगुरु रामानंदाचार्य महाराज ने कहा कि ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सुनक ने मुरारी बापू के मंच पर जाकर कहा कि मैं एक हिंदू हूं। हिंदू का अर्थ एक जाति, एक संप्रदाय नहीं है। हिंदू का अर्थ है आदर्श जीवन जीने वाला इस धरती का प्रत्येक व्यक्ति। यदि आप त्याग, तपस्या, समर्पण की बात करते हैं तो यह किसी एक जाति, मजहब का नहीं होता है, इसलिए हम कहते हैं वसुधैव कुटुम्बकम्। ब्रह्माकुमारीज़ में जिसके भी चेहरे देखों निर्लेप, निष्पक्ष फूल की तरह खिले हुए हैं। क्योंकि यहां किसी से कोई जाति-धर्म नहीं पूछा जाता। ब्रह्माकुमारीज़ का कोई जाति-धर्म, पंथ नहीं यह तो खुशबू बिखेरता है। यहां सुधार से ज्यादा स्वीकार्यता को मान्यता दी जा रही है। यहां अध्यात्म का जूस पिलाया जाता है।

निर्मोही घाट के महामंडलेश्वर महंत आशुतोष महाराज ने कहा कि आज अराजक तत्व धर्म, वेश-भूषा, टीका के आधार पर बंटकारा कर रहे हैं लेकिन ऐसे तत्वों को पछाड़ने का कार्य दादीजी ने किया है। जो समर्पण नारदजी के जीवन में था वह समर्पण आज ब्रह्माकुमारीज़ के जीवन में दिख रहा है। निर्मोही अखाड़ा के महामंडलेश्वर महंत गिरीश दास महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में आकर ऐसा महसूस हुआ कि यहां कोई दिव्य शक्ति विराजमान है। कोई शक्ति खींच रही है। यहां भाई-बहनों के व्यवहार, आचार-विचार को जानकर ऐसी अनुभूति हुई जो रामराज्य के लिए अनुभूति होती है। संस्था विश्व में जोड़ने का कार्य कर रही है। श्रीहनुमानगढ़ी के पीठाधीश्वर महंत बलरामदास महाराज ने कहा कि संस्था रामराज्य लाने की परिकल्पना कर रही है। यहां से रामराज्य का बीज बोया जा चुका है। एक दिन भारत विश्व गुरु होगा। संचालन प्रयागराज से पधारीं बीके मनोरमा दीदी ने किया।



कला और संस्कृति प्रभाग के सम्मेलन का राज्यपाल ने किया शुभारंभ

# हमारा असली खुराक अध्यात्म चिंतन है जो ब्रह्माकुमारीज़ में मिलता है: राज्यपाल आचार्य

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।**

भौतिकवाद और आध्यात्मवाद जब एक-दूसरे का सहायक बनता है तो वह पूर्णता की ओर बढ़ता है। ब्रह्माकुमारीज़ इन दोनों चिंतन को लेकर आगे बढ़ रही है। हम आध्यात्मिक रूप से विकसित हुए बिना भौतिक साधनों का सदुपयोग नहीं कर पाएंगे। बिना अध्यात्म के विकास कभी भी सुख-शांति का आधार हो नहीं सकता है। महान साइंटिस्ट ने कहा था कि साइंस, विज्ञान और आध्यात्मवाद जब एक-दूसरे के पूरक बनते हैं तो वह इस परमात्मा द्वारा बनाई गई सृष्टि का आनंद लेते हैं।

उक्त उद्गार गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने व्यक्त किए। मौका था ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में आयोजित कला-संस्कृति प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन का। राज्यपाल ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। इसमें देशभर से कला और संस्कृति प्रेमियों ने भाग लिया। सकारात्मक परिवर्तन की कला से आनंदमय जीवन विषय पर संबोधित करते हुए राज्यपाल आचार्य ने कहा कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ये मानव के शत्रु हैं। असली विजय अंदर की विजय है। हमारे चिंतन में, वेदों में बाहर की जीत को जीत नहीं माना जाता था। असली जीत हमारे अंदर की जीत है। अंदर के शत्रुओं को जीतने वाला ही विजेता है। यहां का चिंतन हमारी खुराक है। हमारी असली खुराक अध्यात्म चिंतन है जो ब्रह्माकुमारीज़ में मिलता है।

### पहले युद्ध मन की भूमि में लड़े जाते हैं-

राज्यपाल ने कहा कि यूएनओ के विधान में एक बात लिखी है- जो युद्ध मैदान में लड़े जाते हैं, वह युद्ध पहले मानव मन की भूमि में लड़े जाते हैं। कोई सकारात्मक सोच को लेकर किसी से लड़कर दिखाए। कोई पहले मन को दूषित करेगा, क्रोध की आग, ईर्ष्या में जलाएगा तब ही दूसरों को दुख दे सकता है। इसलिए हम परमात्मा से कहते हैं कि हे! परमात्मा मेरा मन नियंत्रण में हो। राजयोग से ही मन पूरा नियंत्रण में आएगा। जीवन को सकारात्मकता की दिशा में बढ़ाएंगे तो पवित्रता आएगी, आनंद आएगा। यह चिंतन साधु-संत और ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा लोगों को दिया जा रहा है। हमने ही नारा दिया वसुधैव कुटुम्बकम्। सारी दुनिया मेरी है और सारी दुनिया मैं हूं। यही तरीका वेदों ने सिखाया। न हमने किसी को अपना बनाया न किसी के बने।

### अध्यात्म हमारे ऋषियों का चिंतन था-

राज्यपाल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ जैसे केंद्रों की समस्त विश्व में विस्तार की आवश्यकता है। जिससे सही अर्थों में मानव अपने स्वरूप को समझकर के परमात्मा द्वारा प्रदत्त इस जीवन को सफल कर सके। परमात्मा सतचित् आनंद, दयालु, निर्विकार, सर्वेश्वर, अमर, पवित्र है ऐसे परमात्मा के सान्निध्य में आकर ये सारे गुणों के आनंद मिलने का रास्ता ब्रह्माकुमारीज़ जैसे स्थलों पर आकर उदित होता है। आत्मा और परमात्मा से मिलाने का मार्ग राजयोग है। 140 देशों में ये राजयोगी भाग्य विधाता बने हुए हैं जो सामाजिक दायित्वों का पालन करते हुए आध्यात्मिकता को परिचित करा रहे हैं। ऐसे संस्थान भारत की आत्मा के रूप में कला-संस्कृति को जनमानस में प्रेरित करने का कार्य करते हैं।

## देशभर से पहुंचे कलाकार, नाट्यकर्मी, कवि, गायक और संगीतकार

### यहां से सकारात्मक परिवर्तन लाना सीखा

शिवानी दीदी को सुना और धीरे-धीरे मेरी सोच बदलने लगी। उनकी क्लास से जाना कि हमें डेली लाइफ में कैसे थॉट्स करना है। दीदी को सुनकर मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी। यहां अपनेआप मन मेडिटेशन में लगता है। यहां के पवित्र बाइब्रेशन हमें फील होते हैं। राजयोग का कमाल है कि यहां सभी के चेहरे चमकते हुए हैं। मैंने सीखा है कि हमें अपने कर्म से लोगों को अपने होने का अहसास कराना है। खुद में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। यही बात में सीखकर जा रही हूं।

- **मधु शाह,** फिल्म एक्ट्रेस, मुंबई

### 4500 से अधिक शव का किया अंतिम संस्कार

मैंने अपने हाथों से अब तक 4500 से अधिक लावारिश शवों का अंतिम संस्कार कराया है। जब जरुरतमंद लोग मुझे काल करते हैं और जब मैं उनके विश्वास पर खरा उतर पाती हूं तो वही मेरे लिए सफलता है। जब मैं रात में सोती हूं तो चैन की नींद आती है कि मैं आज किसी के लिए कुछ कर सकी।

-**वर्षा वर्मा,** अध्यक्ष, एनजीओ एक कोशिश ऐसी भी

### जो करना चाहिए वही करेंगे तो वह सकारात्मक है

कला-संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी चंद्रिका दीदी ने उपरोक्त विषय पर कहा कि वास्तव में हम सभी आत्माएं हैं। परम कलाकार परमपिता शिव परमात्मा 87 साल से विश्व परिवर्तन का कार्य करा रहे हैं। यहां 13 लाख से अधिक युवा, बड़े, बच्चे-बुजुर्ग इस कार्य में सहयोगी बने हुए हैं। आज से हम खुद को एक महान आत्मा, चैतन्य आत्मा, दिव्य आत्मा समझना शुरु कर दें। परमात्मा आनंद के सागर हैं, प्रेम के सागर हैं, सुख के सागर हैं, सर्वशक्तिमान हैं, उसी तरह मैं आत्मा आनंद स्वरुप, प्रेम स्वरुप, सुख स्वरुप हूं। इसी सोच, संकल्प और भावना से कर्म में आने से मन परिवर्तन, व्यक्ति परिवर्तन, समाज परिवर्तन होगा, हो रहा है। आज से संकल्प करें कि मुझे अपनेआप में सकारात्मक परिवर्तन करना है। जो करना चाहिए वही करेंगे वह सकारात्मक है। उन्होंने संकल्प कराया कि आज मैं अपनेआप से संकल्प करता हूं कि जीवन में संपूर्ण सकारात्मकता को अपनाकर, औरों के जीवन में भी सकारात्मकता का चिंतन करके अपना योगदान दूंगी।

### यहां दी जाती है तन-मन को स्वस्थ रखने की सीख

यहां आने से पहले मैं बहुत डरी हुई थी। परेशान थी कि वहां कैसे, क्या होगा। लेकिन यहां आकर, शांत वातावरण देखकर मन खुशी से भर गया। ब्रह्माकुमारीज़ के बारे में मैंने जितना सोचा था यहां उससे बढ़कर मिला। यहां हमने सीखा कि शरीर, मन को स्वस्थ कैसे रखना है। यहां से जाकर राजयोग कोर्स सीखेंगे। मैं बचपन से ही कला से जुड़ी एक्टीविटीज में एक्टिव रही।

- **अंजू छाबड़ा,** दिल्ली उच्च न्यायालय में रजिस्ट्रार

### इन्होंने भी रखे विचार

**अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके डॉ. निर्मला दीदी, कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय, उत्तराखंड से आए संगीत महाविद्यालय के निदेशक आचार्य अंकित पांडे, नेशनल कल्चरल प्रोग्राम के अध्यक्ष पंडित हेमंत गुरु, तृप्ति दीदी, प्रेम दीदी, डॉ. मोहित, उपाध्यक्ष बीके दयाल, एक्टर मोनिका पटेल ने भी विचार रखे।**

### इतने शांतचित्त चेहरे यहां पहली बार दिखे...

इतने शांतचित्त चेहरे यहां पहली बार दिखे। मुंबई की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोगों के पास समय नहीं है। भागदौड़ में चिंता से घिरे हैं। डिस्ट्रक्शन बहुत आसान है। कंस्ट्रक्शन बहुत मुश्किल है। ध्यान और आध्यात्मिकता को आप साथ लेकर चल सकते हैं यह बात यहां आकर सीखी। मेरी शुभ आशा है कि यह ईश्वरीय ज्ञान विश्वभर में फैले और लोगों का कल्याण हो।

- **शंकर मिश्रा,** बॉलीवुड डायरेक्टर, एक्टर, मुंबई।

### राज्यपाल ने यौगिक खेती के बारे में जाना, सोलार पावर थर्मल प्लांट की सराहना की

राज्यपाल देवव्रत ने मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी से मुलाकात कर आशीर्वाद लिया और कुशलक्षेम पूछी। दादी ने राज्यपाल को राखी बांधकर और शॉल पहनाकर सम्मान किया। साथ ही परमात्मा का स्मृति चिंह्न प्रदान किया। इसके बाद राज्यपाल सोलार थर्मल पावर प्लांट देखने पहुंचे, जहां इसके बनने से लेकर बिजली उत्पादन की प्रक्रिया को गहराई से समझा और सराहना की। तपोवन परिसर में यौगिक खेती के मॉडल को समझा। राज्यपाल ने कहा कि किसानों को कुछ जमीन पर यौगिक खेती करना चाहिए। जैविक-यौगिक खेती वर्तमान की जरुरत है। वहीं शांतिवन भ्रमण के दौरान मेडिटेशन रुम में पहुंचकर कुछ पल के लिए राज्यपाल ने धर्मपत्नी दर्शना देवी के ध्यान लगाया। गुलजार दादी के स्मृति स्तंभ पर पहुंचकर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

### हमारा व्यक्तित्व परफ्यूम की तरह हो, जहां जाएं प्रेम-शांति की खुशबू बिखरती जाए: बीके शिवानी दीदी

सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने कहा कि जब हम परफ्यूम लगाते हैं तो किसी को बोलना नहीं पड़ता है। हम जहां जाते हैं खुशबू अपने आप आती है, इसी तरह हमारी सोच, भावनाएं और कर्म हमारी ऊर्जा बनते हैं। यही कारण है कि हमें कुछ लोगों से मिलकर बहुत अच्छा लगता है। मन खुश हो जाता है, हल्का हो जाता है। यह है उस व्यक्ति की परफ्यूम। जिस व्यक्ति के विचार श्रेष्ठ, सकारात्मक, पवित्र होंगे तो उससे मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को इसी तरह के बाइब्रेशन आएंगे। यहां जो शांति और शक्ति आप सभी ने अपने में भरी है उसे अपने साथ घर लेकर जाना है। कला एक शक्ति है।

अखिल भारतीय भगवतगीता महासम्मेलन आयोजित

# वर्तमान के हालातों में गीता ज्ञान से ही कल्याण, शांति संभव है: स्वामी धर्मदेव

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।** ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में अखिल भारतीय भगवतगीता महासम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देश के अलग-अलग स्थानों से संत-महात्मा और महामंडलेश्वर ने भाग लिया। भगवत गीता विभाग द्वारा आयोजित इस पांच दिवसीय सम्मेलन में संत-महात्मों ने भगवत गीता ज्ञान पर मंथन-चिंतन किया।

पटौदी से आए हरिमंदिर संस्कृत महाविद्यालय के महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज ने कहा कि यहां वह पुण्य भूमि है जहां का कण-कण शांति का संदेश देता है। यहां पवित्र वातावरण, वायुमंडल अद्भुत है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा परमात्मा का संदेश लेकर आए। यहां की ब्रह्माकुमारी बहनों का जीवन मानव उत्थान के लिए समर्पित है। इस संस्थान में पिछले 20 वर्षों से आ रहा हूं। यहां की बहनों की त्याग-तपस्या का साक्षी रहा हूं।

उन्होंने कहा कि गीता में वर्णित धर्मग्लानि अभी भी है। इसे समाप्त करने के लिए, इस धरती पर शांति का साम्राज्य स्थापित करने के लिए, शांति का संदेश देने के लिए यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय जो संदेश दे रहा है वह अद्भुत है। गीता में दिया गया ज्ञान- नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। यहां ज्ञान सुनने के बाद हम भी नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा हो गए। हमारा भी मोह खत्म हो गया। जब-जब इस धरा पर धर्म की ग्लानि होती है तो भगवान अवतार लेते रहते हैं। वह पृथ्वी पर आते हैं। आज जो जीवन की पद्धति है, घर-परिवारों में जो स्थिति है, ऐसे में गीता ज्ञान के द्वारा ही कल्याण और शांति संभव है। मन को बदलना होगा, संसार अपने आप बदल जाएगा। हम यहां बैठे-बैठे सभी विकारों का त्याग कर सकते हैं। इस संसार में बसो जरूर पर फंसो नहीं। अध्यात्म से ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा। आज के समय में अध्यात्म जरूरी है।

### गीताजी को जीवन में उतारना होगा-

सिरोही से आए श्रीपति धाम नंदनवन के संस्थापक गोविंद बल्लभदास महाराज ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में हजारों भाई-बहनें समर्पित रुप से सेवा कर रहे हैं। इन सबका एक ही उद्देश्य है कि सबका भला हो। सबका एक ही उद्देश्य है कि लोगों को ज्ञान मिले। आज हमें सम्मेलन करने की जरुरत इसलिए पड़ी हम लोग गीताजी को तो पढ़ते हैं लेकिन गीताजी की बातों को जीवन नहीं उतारते हैं। इसका सबसे मुख्य कारण है कि हमारा आहार शुद्धि नहीं है। आज हम जो भी खा रहे हैं, सबमें कैमिमल है, रासायनिक है। गोमाता के बिना भगवान की कल्पना की जा नहीं सकती है।

### परमात्मा करते हैं नई सृष्टि की स्थापना-

संस्थान के अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई ने कहा कि गीता में साफ लिखा है कि मैं युगे-युगे इस धरा पर आकर ब्रह्मा तन का आधार लेकर नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करता हूं। मानव का फिर से देव समान बनने की शिक्षा देता हूं। गीता विशेषज्ञ बीके ऊषा दीदी ने कहा कि परमात्मा इस धरा पर आकर खुद अपना परिचय देते हैं कि मैं अजन्मा हूं, अभोक्ता हूं। परमात्मा निराकार साकार में मानव तन का आधार लेकर गीता ज्ञान देते हैं। बीके वीणा दीदी और बीके आशा दीदी ने भी विचार व्यक्त किए।

# झांकी में दिखी स्वर्णिम युग और राज दरबार की झलक

## झांकी देखने के लिए आबू रोड और आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में उमड़े लोग

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।** जन्माष्टमी पर शांतिवन परिसर के गेट नंबर एक के पास लगाई गई श्रीकृष्ण की सजीव झांकी ने हर किसी का मन मोह लिया। इसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर बाल्यरूप, युवा रूप, मधुरा और राज दरबार को बहुत ही कलात्मक और सुंदर तरीके से दिखाया गया। झांकी देखने के लिए देर रात तक लोगों का तांता लगा रहा।

झांकी का उद्घाटन करते हुए मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि 16 कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी श्रीकृष्ण का जीवन सर्वगुणों, विशेषताओं और कलाओं से परिपूर्ण था। आपका जीवन सिखाता है कि जीवन को उत्सव के रूप में लें और हर एक परिस्थिति में सदा खुशमय रहें। प्रेम से रहें।

### पांच झांकियों में दिखाया श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र

झांकी में कुल पांच अलग-अलग झांकी सजाईं गई हैं। पहली झांकी में कंसपुरी को दिखाया गया है। जिसमें चरित्र, लाइट-साउंड के माध्यम से अभिनय करते हुए प्रदर्शित किए गए हैं। दूसरे में वृंदावन, वरसाने का दृश्य दर्शाया गया है। तीसरे में श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर जन्म की झांकी दिखाई गई है। चौथे में बाल रुप और पांचवें में राज सिंहासन, राज दरबार, कल का स्वर्णिम भारत की झांकी सजाई गई है। बैकग्राउंड में चलती म्यूजिक और कामेंट्री लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र रही।

# ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान की ऐसी रोशनी बिखेरी जो आज भी मिल रही है

## उत्तर प्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने राजयोग व्यक्तित्व विकास शिविर को किया संबोधित

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राज.)।** सिंध से प्रारंभ हुआ शांति के संदेश का कारवां आज वटवृक्ष बन गया है। ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान की ऐसी रोशनी बिखेरी जो आज भी मिल रही है। मैं वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्रों के संपर्क में हूं। कई दशकों से ब्रह्माकुमारी बहनों का समर्पण, त्याग की भाव, आत्मीयता, मधुरता, स्नेह का साक्षी रहा हूं। यहां से यह सब सीखने लायक है। ऐसे लोगों से जुड़कर ज्ञान और विचारों को कनेक्शन हो जाता है। हम जीवन में अच्छाइयों को आत्मसात करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि जितने भी लोग यहां जुड़े हैं सभी अपने स्वविवेक, स्व प्रेरणा और स्वभाव के कारण जुड़े हैं। मैंने कभी अपने जीवन में ऐसा विज्ञापन नहीं देखा कि जिसमें लिखा हो कि ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ने के लिए संपर्क करें। यह बात उप्र के विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने शांतिवन में आयोजित राजयोग व्यक्तित्व विकास शिविर में कही। कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाई ने स्वागत भाषण दिया। संचालन डॉ. सविता बहन ने किया। मधुर वाणी ग्रुप ने गीत प्रस्तुत किया। राजस्थानी पगड़ी, माला, शॉल पहनाकर विस अध्यक्ष महाना, उनकी धर्मपत्नी अनीता महाना का स्वागत किया गया।

### अच्छे विचारों से बनता है चरित्र-

विस अध्यक्ष महाना ने कहा कि जब हम अपने विकारों को शांत करने के लिए यहां से जुड़ेंगे तो हमें शांति मिलेगी। यदि हम अपने स्वार्थ के कारण जुड़ेंगे तो शांति नहीं मिलेगी। जब हम अच्छे विचारों को पढ़कर, उन्हें जीवन में आत्मसात कर आचरण और व्यवहार में उतारते हैं तो हमारा चरित्र बनता है। एक दिन में अच्छे विचार आत्मसात नहीं हो जाते हैं। इसके लिए धैर्य और सामूहिक चिंतन चाहिए। जिन्होंने सारा जीवन इसमें खपा दिया है उनमें कोई न कोई तो विशेष बात होगी।

### पहले हम खुद शांत हों...

विस अध्यक्ष महाना ने कहा कि जो किसी को ऊपर उठाने की बात करता है वह सदैव ऊपर रहता है। जब हम खुद को परमात्मा से जोड़ते हैं, खुद शांत रहते हैं तो दूसरों को शांत कर पाएंगे। अपने से प्यार करें, अपनों से प्यार करें। संस्था से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति का आचरण, व्यवहार संस्था का परिचय देता है। इसलिए समाज में प्रेरक बनकर व्यवहार करें। आपका व्यवहार, चरित्र, आचरण देखकर लोग संस्था के चरित्र से जोड़ते हैं, इसलिए ऐसे कर्म करें कि संस्था की पहचान बनें।



पांच दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन आयोजित

# वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए शांति पत्रकारिता को देना होगा बढ़ावा

## भारत सहित नेपाल से 1500 से अधिक पत्रकार, संपादक, ब्यूरो चीफ ने लिया भाग

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।** ब्रह्माकुमारीज संस्थान के शांतिवन परिसर में पांच दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें विद्वान पत्रकारों ने चिंतन-मंथन कर निष्कर्ष निकाला कि वैश्विक शांति और सद्भाव के लिए मीडिया को सशक्त बनना होगा। शांति पत्रकारिता को बढ़ावा देना होगा। इसके लिए सभी ने एकमत से एजेंडा पारित किया कि अध्यात्म के बिना शांति संभव नहीं है। पत्रकारों के जीवन में अध्यात्म का समावेश हो। शांति पर बात करने के लिए पहले खुद के जीवन में शांति, प्रेम, सौहार्द होना जरूरी है। वैश्विक सद्भाव के लिए शांति पत्रकारिता विषय पर दो सत्रों में सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भारत सहित नेपाल से 1500 से अधिक प्रिंट- इलेक्ट्रानिक मीडिया, रेडियो, बेव से जुड़े संवाददाता, पत्रकार, संपादक, मीडिया शिक्षक और पत्रकार संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

### अब मीडिया को समाधान का हिस्सा बनना होगा-

समापन सत्र में अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि अब समय आ गया है कि हमें समस्या पर चर्चा करने की जगह समाधान का हिस्सा बनना होगा। इसके लिए हमें अपने जीवन में सबसे पहले समाधान और शक्ति के संकल्पों को लाना होगा। सारे विश्व की नजर भारत पर है। क्योंकि भारत के पास ही दुनिया की समस्याओं को हर करने की शक्ति और ताकत है। मीडिया को ऐसे सकारात्मक कदम उठाने होंगे, राह दिखाना होगी कि समाज को नई प्रेरणा, नई राह मिले। जो हम सुनते, देखते और पढ़ते हैं उससे मन का स्वास्थ्य बनता है। जो बार-बार संकल्प कर लिया वह हमारी सोच बन जाती है। सोच से संस्कार, संस्कार से कर्म बनता है। यही कर्म हमारा भाग्य बनाते हैं। मीडिया के भाई-बहन जब अपनी सोच को बदल देंगे तो वह जो लिखेंगे, समाचार पेश करेंगे तो समाज में श्रेष्ठ कंटेंट ही जाएगा। घर में जो धन आए वह दुआओं वाला हो, दूसरों को सुकून-शक्ति देने वाला हो।

### हर घंटे एक मिनट श्रेष्ठ संकल्प करें-

शिवानी दीदी ने कहा कि कार्य के दौरान बीच-बीच में हर घंटे एक मिनट रुककर अपनेआप को याद दिलाएं कि मैं एक शक्तिशाली आत्मा हूं। जब यह संकल्प बार-बार दोहराएंगे तो वह हमारा संस्कार बन जाएगा। संकल्प से सिद्धी होती है। संकल्प को दोहराएंगे तो सिद्ध होना ही है। यदि हम बार-बार डिप्रेस के संकल्प को दोहराएंगे तो वह भी हमारा संस्कार बन जाता है। मीडिया में जब बार-बार हम जो न्यूज़ या समाचार देखते हैं तो वह हमारे संकल्पों में आता है और संस्कार बनने लगता है। टेक्नोलॉजी के इस दौर में सबसे बड़ा संग का रंग है- फोन में कुछ न कुछ देखना और सुनना। अब हमारे जीवन में सबसे ज्यादा फोन का रंग लगने लगा है। उन्होंने राजयोग की गहन अनुभूति कराते हुए कहा कि रोज सुबह कुछ समय ध्यान करें और संकल्प करें कि मैं एक चमकता हुआ सितारा हूं। मैं शांत हूं, स्थिर हूं। मैं शक्तिशाली आत्मा हूं। मैं परमात्मा का फरिश्ता हूं। सृष्टि के इस परिवर्तन के कार्य में मैं आत्मा अपने संस्कार परिवर्तन से सतयुगी सृष्टि का आह्वान करती हूं। मैं सतयुगी आत्मा, शक्तिशाली आत्मा हूं।

आईआईएमसी नई दिल्ली के पूर्व निदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान समाज के 20 अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। संस्था सर्व समाज के उत्थान, कल्याण और उत्थान के लिए कार्य कर ही है। आत्म सुधार से ही जन सुधार की प्रक्रिया शुरू होती है। ब्रह्माकुमारीज़ में मनुष्य बनने की यात्रा पर ले जाया जाता है।

छग रायपुर से आए कुशाभाऊ ठाकरे जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ समाज में आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्यों को बढ़ा रहा है। यहां खुद को परमात्मा से जोड़ते हैं। आज विश्व में शांति पत्रकारिता की जरूरत है।

अहमदाबाद से आए टाइम्स ऑफ इंडिया के एडिटर वरिष्ठ पत्रकार तुषार प्रभु ने कहा कि शांति पत्रकारिता हमारे लिए एक नया कॉन्सेप्ट है। मैं ब्रह्माकुमारीज़ का ऋणी हूं कि राजयोग मेडिटेशन से मुझमें सकारात्मक बदलाव आया है। एक साल में मैंने एक बार ही गुस्सा किया है। राजयोग सोच को बदल देता है। पहले हमें मन को शांति का केंद्र बनाना होगा।

उदयपुर से आए मोहनलाल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के जर्नलिज्म डिपार्टमेंट के एचओडी प्रो. कुंजन आचार्य ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ का साधुवाद जो शांति पत्रकारिता की बात कर रहा है। शांति का समाधान कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं, हमें इस पर काम करना होगा। युद्ध पत्रकारिता की बात सुनी है लेकिन कभी शांति पत्रकारिता की बात नहीं सुनी है।

उप्र के बुलंदशहर से आए भाजपा अनुसूचित मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री और सांसद डॉ. भोला सिंह ने कहा कि मैं 15 साल से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हूं। यहां आकर जो शांति की अनुभूति होती है वह बाहर की दुनिया में नहीं मिलती है। हम जैसा सोचते हैं, विचार करते हैं, वैसे बनते जाते हैं। यदि हमारे विचारों में शांति है तो हम वैसा ही बोलते हैं।

अंडमान एंड निकोबार दीप से आए सांसद कुलदीप राय शर्मा ने कहा कि मीडिया सबसे बड़ी ताकत है। प्राकृतिक आपदा में मीडिया महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाता है। ब्रह्माकुमारीज़ में दिए जा रहे ज्ञान और शिक्षा को मीडियाकर्मी अपने जीवन में अपनाएंगे तो निश्चित रूप से उनके अपने जीवन और पत्रकारिता में बदलाव आएगा।

मीडिया निदेशक राजयोगी बीके करुणा भाई ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज में एक गुरुकुल शिक्षा के रूप में शिक्षा दी जाती है। यहां के ज्ञान से मैंने पहली बार पाठ सीखा कि हम सभी आत्माएं हैं। इसके बाद मेरी सोच बदल गई। संस्था यही संदेश पूरे विश्व में देने के लिए समर्पित है कि हम सभी एक चैतन्य आत्मा हैं और परमपिता परमात्मा की संतान हैं।

लखनऊ से आए ऑल इंडिया स्माल न्यूजपेपर एसोसिएशन (आसना) के अध्यक्ष एसएस त्रिपाठी ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग मेडिटेशन सीखकर मेरे जीवन में अद्भुत बदलाव आए। ध्यान के कारण आज 87 वर्ष की उम्र में भी खुद को फिट महसूस करता हूं। मेडिटेशन से मन में सदा सुख-शांति और आनंद रहता है।

### चिंतन करें समाज में शांति कैसे आएगी

वरिष्ठ राजयोग शिक्षक राजयोगी बीके सूर्य भाई ने कहा कि सभी पत्रकार भाई-बहनों से आह्वान है कि आप सभी चिंतन करें कि समाज में न्यूज देने के साथ-साथ समस्याओं का समाधान भी पेश करें। समाज में शांति कैसे आएगी, इस पर स्टोरी करें। ऐसी स्टोरी करें कि लोगों के जीवन में आशा आ जाए, नई ऊर्जा आ जाए, जीवन में शांति और खुशी आ जाए। आप सभी अपनी कलम की ताकत से समाज को नई जागृति दे सकते हैं। समाज को जागृत कर सकते हैं। अंतर्मन की शक्ति का सफलता में कैसे उपयोग करें इस का मैंने हजारों लोगों पर प्रयोग किया है। लोगों का जीवन बदल गया है। जो डिप्रेशन में थे आज खुश हैं। हम सभी के मन में एक क्रिएटिव एनर्जी है। मनुष्य की जो क्षमताएं हैं उन्हें जगाना होगा, तभी समाज में शांति आएगी। पत्रकार समाज के निर्माता हैं।

### कलम की शक्ति को कल्याण में लगाएं-

- संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी ने कहा कि आप अपनी कलम की शक्ति को समाज के कल्याण और उत्थान में लगाएं। आपकी लेखनी से लोगों में आशा की किरण जागे। उन्हें प्रेरणा मिले। यहां से सभी संकल्प लेकर जाएं कि समाज के उत्थान के लिए अपनी लेखनी की शक्ति का उपयोग करेंगे।

- महासचिव बीके निर्वैर भाई ने कहा कि मेरा मीडिया के भाई-बहनों से अनुरोध है कि विश्व को अपनी कलम से, रिपोर्टिंग से अच्छाई को बढ़ावा दें। परमात्मा ने हम सबको इस धरा पर अच्छा पार्ट बजाने के लिए भेजा है। इसलिए आप सभी आपके पास जो पावर है उसका उपयोग समाज कल्याण, विश्व शांति के लिए करें।

### देशभर से इन दिग्गजों ने भी की शिरकत

ओड़िशा बुद्ध से आए ऑल इंडिया रेडियो के पूर्व एडवाइजर प्रो. चितरंजन मिश्रा, नेपाल सप्ततारी से आए फेडरेशन ऑफ नेपाल जर्नलिस्ट के अध्यक्ष श्रवण कुमार राव, ओड़िशा से आईं एससी-एसटी बोर्ड और स्टेट एडवाइजरी बोर्ड की सदस्य डॉ. मिनाती बेहरा, मुंबई से आए सीनियर मैनेजमेंट कंसल्टेंट ओमवीर सिंह सैनी, इंदौर से आए रेडियो सरगम के निदेशक आशीष गुप्ता, मैसूर से आए जानकी टीवी के मैनेजिंग डायरेक्टर महादेव स्वामी, भागलपुर से आए इग्नू के असिस्टेंड डायरेक्टर डॉ. कमलेश मीना, भागलपुर से आईं इग्नू की रीजनल डायरेक्टर प्रो. डॉ. सराह नसरीन, नई दिल्ली से आईं मोटिवेशनल स्पीकर ललिता सहरावत ने मीडिया सम्मेलन में शिरकत की और अपने विचार व्यक्त किए।

### डिवाइन मीडिया टीम ने भी रखे विचार-

राष्ट्रीय समन्वयक बीके शांतनु ने स्वागत भाषण दिया। उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश, मुंबई सबजोन की निदेशिका बीके नलिनी दीदी, राष्ट्रीय समन्वयक बीके सरला बहन, पीआरओ बीके कोमल, ज्ञानामृत पत्रिका की संपादक बीके उर्मिला बहन, राष्ट्रीय समन्वयक बीके सुशांत, मुख्यालय संयोजिका बीके चंदा बहन, चंडीगढ़ जोन की जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके पूनम बहन, जयपुर जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके चंद्रकला बहन, गुजरात जोनल को-ऑर्डिनेटर बीके नंदिनी, सिद्धपुर सबजोन को-ऑर्डिनेटर बीके विजया बहन, गुजरात वलसाड से आईं बीके रंजन बहन ने भी संबोधित किया। मधुरवाणी ग्रुप के बीके गायक सतीश व टीम ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक संध्या में कलाकारों ने प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

## संपादकीय

# शक्ति की आराधना और साधना का पर्व है नवरात्र

*नवरात्र पर्व हिन्दू धर्म के महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है, जिसे देवी दुर्गा की पूजा और भक्ति के साथ मनाया जाता है। यह त्योहार नौ दिनों तक चलता है और इसका मुख्य उद्देश्य शक्ति की पूजा के साथ उसकी सम्पूर्णता में खो जाना है। यहां से हमें कुछ महत्वपूर्ण सीख मिलती है। नवरात्र में देवी दुर्गा की पूजा से हमें महिलाओं का सम्मान और महत्व सीखने को मिलता है। देवी दुर्गा शक्ति की प्रतीक है और हमें महिलाओं में उनकी शक्ति को मान्यता देने की महत्वपूर्णता बताती है। सामर्थ्य: नवरात्र के दौरान, भक्तों को नौ दिनों तक व्रत रखना पड़ता है, जिससे उनका आत्म-नियंत्रण और सामर्थ्य बढ़ता है। यह हमें आत्म-अनुशासन की महत्वपूर्णता सिखाता है। पौराणिक महत्व: नवरात्र के दौरान, देवी दुर्गा के नौ रूपों की कथाएँ सुनाई जाती हैं, जो हमें पौराणिक और आध्यात्मिक ज्ञान की ओर मोड़ने का अवसर देती हैं। नैतिक मूल्य यह है कि नवरात्र में भक्ति, त्याग, सहनशीलता और दया की महत्वपूर्णता पर बल दिया जाता है। यह हमें नैतिक मूल्यों की महत्वपूर्णता सिखाता है और हमें एक उदाहरणीय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। आत्म-परिवर्तन के रूप में हमें नवरात्र का अर्थ है 'नौ रातें', जिसका मतलब है कि इस समय नौ रातों तक हमें अपने आप में परिवर्तन करने का अवसर मिलता है। यह हमें अपने दोषों को सुधारने और अच्छाई की ओर बढ़ने का प्रेरणा देता है। भक्ति और समर्पण: नवरात्री में भक्ति और समर्पण की अद्भुतता होती है।*

## बोध कथा/जीवन की सीख

# प्रकृति सब लौटाकर देती है

जो कुछ भी हमारे अंदर भरा होता है वो ही प्रकृति हमें लौटा देती है। एक व्यक्ति अपने परिवार, रिश्तेदार, मित्र, मोहल्ला के निवासी, अपनी फैक्ट्री के कार्यकर्ताओं से अति दुःखी होकर समाधान के लिए अपने गुरु के पास पहुंचा और अपनी पीड़ा गुरुदेव को बताते हुए बोला- 'मेरे कर्मचारी, पत्नी, बच्चे और आसपास के सभी लोग बेहद स्वार्थी हैं। कोई भी सही नहीं है, क्या करूं गुरुदेव?' गुरुजी ने कहा-' पुत्र, निःसंदेह तुम्हारी समस्या अति गंभीर है। तुम आज रात आश्रम में ही रहो। मैं रात्रि में मंथन करूंगा और सुबह समाधान बताऊंगा। वह रात्रि विश्राम के लिए रुक गया। भोर की पूजा-अर्चना के पश्चात अपने अन्य शिष्यों की समस्याओं को निबटा कर गुरुजी ने अंत में उस व्यक्ति को अपने पास बुलाया। एक रात आश्रम में बिताने के अनुभव को भी वह व्यक्ति अपने गुरु को बताने से स्वयं को रोक न सका और बोला-' गुरुदेव, आपके आश्रम में भी स्वार्थियों ने अपना डेरा जमा रखा है। हर कोई आपसे कुछ न कुछ चाहकर ही यहां रुका है। गुरुदेव ने उसकी बातों को सुनकर कहा- मैं एक कहानी सुना रहा हूं, उसे गंभीरता से सुनना। इसमें ही तुम्हारी समस्या का समाधान छिपा है। एक गाँव में एक विशेष कमरा था जिसमें एक हजार आईने लगे थे। एक लड़की उस कमरे में गई और खेलने लगी। उसने देखा एक हजार बच्चे उसके साथ खेल रहे हैं और वो उन बच्चों के प्रतिबिंब को देखकर खुश हो गयी। जैसे ही वो ताली बजाती सभी बच्चे उसके साथ ताली बजाते। उसने सोचा यह दुनिया की सबसे अच्छी जगह है। बच्ची के प्रस्थान के पश्चात थोड़ी देर बाद इसी जगह पर एक उदास आदमी कहीं से आया। उसने अपने चारों तरफ हजारों दुःख से भरे चेहरे देखे। वह बहुत दुःखी हुआ। उसने हाथ उठा कर सभी को धक्का लगाकर हटाना चाहा तो उसने देखा हजारों हाथ उसे धक्का मार रहे हैं। उसने कहा यह दुनिया की सबसे खराब जगह है। वह यहां दोबारा कभी नहीं आएगा और उसने वो जगह छोड़ दी।

**संदेश**: यह दुनिया एक कमरा है जिसमें हजारों शीशे लगे हैं। जो कुछ भी हमारे अंदर भरा होता है वो ही प्रकृति हमें लौटा देती है। संसार हमें अपने मन के अनुरूप ही दिखता है इसलिए अपने मन और दिल को साफ़ रखें। तब यह दुनिया आपके लिए स्वर्ग की तरह अनुभव होगी। संसार को सुधारने की आकांक्षा रखने वालों के लिए सर्वप्रथम स्वयं में सुधार करें, संसार अपने आप सुधर जाएगा।

**मेरी कलम से**

डॉ. सिमरन चौधरी,
करनाल, हरियाणा

# मेरे नवजात बच्चे ने मुझे परमात्मा शिव का सत्य ज्ञान दिया, बदल गया जीवन

## राजयोग कोर्स के बाद मिल गए सारे सवालों के जवाब

**शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।**

मैं जब 11 साल की थी तो शिवजी के व्रत रखना शुरू किए। बहुत लंबे समय तक निरंतर सोमवार के व्रत करती रही। कभी सोलह सोमवार तो कभी खुले सोमवार के व्रत। कभी पूर्णमासी व्रत, कभी शुक्रवार की कथा। इतना व्रत कथा रखते हुए भी मेरे अंदर जो भी सवाल और बातें वैसी की वैसी थी। वर्क करने के बावजूद भी मुझे कभी नहीं लगता था कि जो मुझे चाहिए वह मुझे मिल गया है। जब मैं बड़ी होने लगी तो मम्मी से मैंने कहा भगवत गीता का पाठ करना है। मैं कॉलेज के समय तक चार बार गीता पढ़ चुकी थी। पूरा रामायण पाठ भी किया, फिर भी हमारे अंदर वह संतुष्टता प्राप्त नहीं हुई। कितना भी पढ़ ले समझ गई लेकिन तसल्ली नहीं मिली। जहां तक युवा कल की बात है यह पढ़ना है, यह करना है, यह बना है पूरी श्रृंखला मन में बढ़ता चला गया। लेकिन यह कभी पता नहीं चलता था कि कब तक हमें रुकना है। लाइफ का असली मकसद लक्ष्य क्या है।

21 साल की उम्र में मेरी शादी हो गई। मेरे यहां पुत्र का जन्म हुआ जो दादी के साथ बचपन से ही ओम शांति ओम के मंत्र वाला गीत सुनकर खुश होता था। एक समय आया कि वह मंत्र गीत सुने बिना खाना भी नहीं खाता था। मैंने भी जब वह मंत्र ध्यान से सुना- ओम शांति ओम आई एम ए पीसफुल सॉल। तो मुझे भी बड़ा सुकून मिलने लगा। मुझे ऐसा फील हुआ जो मुझे चाहिए यहां से मिल सकता है। धीरे-धीरे सारा दिन पीस ऑफ़ माइंड टीवी ही चला रहा। मैं एक दिन सिस्टर शिवानी को सुनते-सुनते खो गई। वह कुछ एक्सपेरीमेंट करने को कह रही थीं। एक्सपेरीमेंट मैंने अपनी लाइफ, बेटे और लोगों के ऊपर करना शुरू कर दी। सचमुच मुझे एक नई जिंदगी समझ आने लगी।

नवरात्रि व्रत को मैं करती थी लेकिन अध्यात्मिक रहस्य पता ना होने के कारण बस किए जा रही थी। जब मुझे रहस्य समझ आने लगा तो बहुत रोई कि मैंने जिंदगी के 27 साल यूं ही बिता दी। राजयोगी सूरज भाई के अनुसार भी मैंने स्वमान का अभ्यास मैं मास्टर सर्वशक्तिमान, परम पवित्र आत्मा का अभ्यास करने लगी। फिर ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर जाकर राजयोग कोर्स पूरा किया। ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान मिलने के बाद हमने प्याज-लहसुन सब छोड़ दिया। कोर्स के तीसरे दिन ही मुझे समझ आ गया था कि मैं सही जगह पर आ गई हूं। हमारे जीवन के सभी सवालों के जवाब मिल गए। इसके लिए मैं परमात्मा का बहुत ही शुक्रगुजार हूं। मुझे इस ज्ञान से जोड़ने के लिए मेरा बेटा निमित्त बना। परमात्मा का शुक्रिया जो मुझे मिल गए।

# आत्मगत स्वरूप की वैभव संपन्नता द्वारा उच्च आयाम

**जीवन का मनोविज्ञान** भाग - 63

- डॉ. अजय शुक्ला, बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड डायरेक्टर
(स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

**शिव आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान।**

परमात्म सत्ता के माध्यम से आत्म तत्व के आदि स्वरुप का साक्षात्कार होने का सौभाग्य प्राप्त हो जाना पूर्व जन्म के संचित पुण्य कर्म का प्रमाण है जिससे मानव जीवन के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं अस्तित्व में एकरूपता का समावेश सुनिश्चित हो जाता है। आत्मानुभूति की प्राप्ति के पश्चात् चेतना के सुखांत का शुभारम्भ हो जाता है जिसमें आत्मगत अवस्था की उच्चता सुख , शांति एवं आनंद की निरंतरता से जगत में जीवात्मा के आगमन की व्यावहारिक सार्थकता को पूर्णतः सिद्ध कर देती है। मानव जीवन में आत्मिक प्रेम की प्रगाढ़ता से पवित्रता के गुण संपन्नता द्वारा शक्तिशाली आत्मा के प्रेरणादायी प्रसंग को मानव आत्माओं के लिए उदाहरणमूर्त स्वरुप में श्रेष्ठ संकल्प और संकल्पना का आधार स्तम्भ बन जाते हैं ।

### आत्मिक समृद्धि की व्यावहारिक बोधगम्यता-

सृष्टि में अनादि स्वरुप की व्यवस्था का आत्म ज्ञान हो जाने पर स्वयं की वास्तविक सत्य पहचान प्राप्त हो जाती है जिसके परिणाम स्वरुप जीवात्मा द्वारा आगमन एवं प्रस्थान के नियमित अनुक्रम की परिवर्तनकारी प्रक्रिया को स्वीकार कर लिया जाता है । आत्मा को जब स्वयं के अस्तित्व पर निश्चय हो जाता है तब

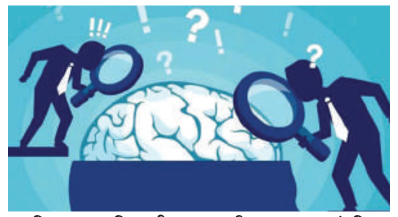

आत्मिक समृद्धि की व्यावहारिक दशा एवं दिशा का बोध प्रकट होता है जो निज आत्मानंद के जन्म जन्मान्तर की स्थायी उपस्थिति को सार्थकता प्रदान करने में सिद्धहस्त रहता है । परमात्म सत्ता के माध्यम से आत्म तत्व के आदि स्वरुप का साक्षात्कार होने का सौभाग्य प्राप्त हो जाना पूर्व जन्म के संचित पुण्य कर्म का प्रमाण है जिससे मानव जीवन के व्यक्तित्व , कृतित्व एवं अस्तित्व में एकरूपता का समावेश सुनिश्चित हो जाता है ।

### अनादि स्वरुप से आदि स्वरूप की संपन्नता-

आत्मा का अनादि स्वरुप चेतना की विराटता का द्योतक है जो आत्म जगत के देवत्व को स्थापित करने में आत्मिक समृद्धि की जीवंतता के उच्च आयाम को निरंतर बनाए रखने में मददगार सिद्ध होता है । अनादि स्वरुप के माध्यम से आदि स्वरुप की वैभव सम्पन्नता का दिग्दर्शन मानव जीवन के लिए एक अद्भुत अकल्पनीय, अविश्वसनीय, अवर्णनीय, आश्चर्यजनक एवं चमत्कारिक घटना है जो व्यक्ति को महामानव से देवात्मा के दिव्य और अलौकिक स्वरुप में परिवर्तित कर देती है।

### आत्मानुभूति द्वारा चेतना का शुद्ध उपयोग :

आध्यात्मिकता के सानिध्य की श्रेष्ठतम स्थिति आत्म समृद्धि के नैसगिक आत्मज्ञान को पुनर्स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसमें आत्मा की अनुभूति से शुद्ध उपयोग का उच्चतम स्वरुप विद्यमान रहता है । आत्मानुभूति की प्राप्ति के पश्चात् चेतना के सुखांत का शुभारम्भ हो जाता है जिसमें आत्मगत अवस्था की उच्चता सुख , शांति एवं आनंद की निरंतरता से जगत में जीवात्मा के आगमन की व्यावहारिक सार्थकता को पूर्णतः सिद्ध कर देती है । मानव जीवन में आत्मिक प्रेम की प्रगाढ़ता से पवित्रता के गुण संपन्नता द्वारा शक्तिशाली आत्मा के प्रेरणादायी प्रसंग को मानव आत्माओं के लिए उदाहरणमूर्त स्वरुप में श्रेष्ठ संकल्प और संकल्पना का आधार स्तम्भ बन जाते हैं ।

### श्रेष्ठतम पुरुषार्थ से पूज्य स्वरुप का निर्माण-

आत्म समृद्धि के प्रति अगाध - श्रद्धा व्यक्तित्व की उच्चता को परिष्कृत करते हुए पुरुषार्थ के लिए अभिप्रेरणा प्रदान करती है जिससे सात्विकता की नैसर्गिक पृष्ठभूमि सम्पूर्ण वैष्णव स्वरुप में निर्मित होकर मंगलकारी कार्यों की सम्पन्नता हेतु सम्पूर्ण समर्पित हो जाती है । साधना एवं आराधना के माध्यम से जहां भक्ति और आत्मज्ञान व्यावहारिक जीवन में साकार होते है वहीं आध्यात्मिक शक्ति द्वारा आत्म समृद्धि की अनुभूति से श्रेष्ठतम प्रबल पुरुषार्थ को अंगीकार करके चेतना की स्थापना पूज्य स्वरुप में सुनिश्चित की जा सकती है ।

"किसी दिन, जब आपके सामने कोई समस्या ना आए, आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।"
- स्वामी विवेकानंद

"दुनिया को आप अपना सर्वश्रेष्ठ दीजिए, आपके पास भी सर्वश्रेष्ठ ही लौट कर आएगा।"
- स्वामी दयानंद सरस्वती



## दादी प्रकाशमणि एमआरआई सेंटर का शुभारंभ

# हॉस्पिटल सेवाओं में ब्रह्माकुमारीज़ का मैनेजमेंट काबिलेतारीफ : सांसद

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।**

राधामोहन महरोत्रा ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रामा सेंटर ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए और सिरोही जिले के नागरिकों की सुविधा को देखते हुए बड़ी सौगात दी है। अब जिले के लोगों को एमआरआई के लिए बड़े शहरों की ओर नहीं जाना पड़ेगा। अब यह सुविधा आबू शहर में ही ट्रामा सेंटर में मिलेगी। शांतिवन के कॉन्फ्रेंस हाल में आयोजित कार्यक्रम में दादी प्रकाशमणि एमआरआई सेंटर का शुभारंभ अतिथियों द्वारा किया जाएगा। यह सेंटर इंडियन ऑइल कार्पोरेशन लिमिटेड, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, आरोग्यम और ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से शुरू किया गया है। इंडियन ऑइल कार्पोरेशन लिमिटेड के चेयरमैन श्रीकांत माधव वैद्य ने कहा कि इंडियन ऑइल कार्पोरेशन इंडिया की सबसे बड़ी कंपनी है। यह हमारे विहांड बिजनेस का क्षेत्र है जिसके तहत हम मेडिकल सुविधाओं के लिए हेल्प करते हैं। ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने हॉस्पिटल द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी।

### सांसद ने जालौर में हॉस्पिटल खोलने का किया आह्वान-

जालौर-सिरोही सांसद देवजी भाई पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ सामाजिक क्षेत्र में बहुत कार्य कर रही है। सरकार संसाधन और साधन देती है लेकिन जो मैनेजमेंट ब्रह्माकुमारीज़ कर रही है वह काबिलेतारीफ है। ब्रह्माकुमारीज़ का मैनेजमेंट अद्भुत है। सबका साथ और सबका विकास और सबका विश्वास। उन्होंने आग्रह कि आप यदि व्यवस्था संभालने के लिए तैयार हों तो हम सभी सुविधाएं देने को तैयार हैं। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के एजीएम अमरदीप सिंह ने कहा कि बहुत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे छोटे से सहयोग से नागरिकों को बड़ी सुविधा मिल सकेगी। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बीके राजयोगिनी मुन्नी दीदी, संस्थान के कार्यकारी सचिव बीके डॉ. मृत्युंजय भाई ने कहा कि एमआरआई की सुविधा मिलने से लोगों को बड़ी सुविधा होगी।

# प्रदेश की पहली ब्लड कंपोनेंट मशीन ट्रामा सेंटर में स्थापित

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)**

राधा मोहन मेहरोत्रा ग्लोबल हॉस्पिटल ट्रॉमा सेंटर आबू रोड में प्रदेश की पहली ब्लड कंपोनेंट एक्स्ट्राक्टर एंड कैमिल्युमिनेसन्स मशीन को स्थापित किया गया है। इस मशीन से एक साथ अलग-अलग बीमारियों की जांच की जा सकेगी। साथ ही मरीजों को ब्लड टेस्टिंग की फास्ट सुविधा मिलेगी। इस मशीन से एक-दूसरे में फैलने वाली बीमारी जैसे -एचआईवी, एचबीएसएजी, एचसीवी, वीडीआरएल की विंडो पीरियड में डिटेक्ट करती है। साथ ही इससे बल्ड के कंपोनेंट अलग किए जाएंगे। इस कार्य में विशेष रूप से रोटरी क्लब ऑफ़ अहमदाबाद रिवरफ्रंट, क्यूपर्टिनो का रोटरी क्लब का भी सहयोग रहा।

### ब्लड कंपोनेंट मशीन खून में शामिल तत्वों को करेगी अलग-

ब्लड बैंक के प्रभारी धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि ब्लड कंपोनेंट मशीन खून में शामिल तत्वों को अलग-अलग कर देती है। आबू रोड-पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि ब्लड बैंक में नई मशीनें आने से यहां अब मरीजों को जल्द जांच रिपोर्ट मिल सकेगी। परियोजना अध्यक्ष पराग फतेहपुरिया, डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बलवंत सिंह चिराना, डीआरएफसी ललित शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी व ब्रह्माकुमारीज़ के महासचिव बीके बीके निर्वैर भाई ने कहा कि ट्रामा सेंटर में नई मशीनें आने से निश्चित रुप से मरीजों को लाभ मिलेगा।

# मेरे कर्म से किसी का मन डिस्टर्ब होता है तो मन शांत नहीं रह सकता

## इनर टेक्नोलॉजी नेशनल कॉन्फ्रेंस में देशभर से आईटी से जुड़े प्रोफेशनल्स, एक्सपर्ट और मैनेजर ने लिया भाग

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शांतिवन परिसर स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में आईटी विंग की इनर टेक्नोलॉजी नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। क्रिएटिव योवर बेस्ट वर्जन विषय पर संबोधित करते हुए अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता बीके शिवानी दीदी ने कहा कि यहां से सभी संकल्प लेकर जाएं कि रोज एक घंटा स्वयं के लिए निकालेंगे। फिर दो माह बाद आप स्वयं फील करेंगे कि मेरे पास पहले से ज्यादा टाइम आ गया है। हमारा जितना ज्यादा माइंड पावरफुल होता जाएगा तो वह उतने कम आप्शन देगा। इससे हमारा समय बचेगा। जिस इमोशन से हमारी एनर्जी नीचे जा रही है तो वह रांग है, जिस इमोशन से हमारी एनर्जी ऊपर जा रही है, बढ़ रही है तो वह राइट है।

उन्होंने कहा कि मेरे कर्म से किसी का मन डिस्टर्ब होता है तो मेरा मन स्टेबल, शांत नहीं रह सकता है। ऐसे कर्म जिनसे दूसरों को प्रॉब्लम आती है तो वह हमारे खाते में जुड़ जाता है। यदि हम समय की रिस्पेक्ट करेंगे तो समय हमारा रिस्पेक्ट करेगा। आज से ये लाइन खत्म कर दें कि मेरे पास टाइम नहीं है।

### आत्मा की 3 फैकल्टी- मन, बुद्धि,संस्कार

- मन ज्यादा सोचता है। जो ज्यादा सोचता है उसकी क्वालिटी और विचार कमजोर होते हैं। यदि हम से बोला जाए कि किसी की अच्छाई के बारे में बोलना है तो हम दो लाइन में ही खत्म कर देंगे। लेकिन यदि बुराई करना हो तो घंटों तक बोलते रहेंगे। इसलिए जब विचारों में क्वालिटी होगी तो शरीर की शक्ति भी बचेगी। बुद्धि सही निर्णय देगी।
- आज हम अपना निर्णय खुद नहीं ले पा रहे हैं, क्योंकि हमारी बुद्धि की शक्ति कमजोर हो गई है। इसलिए हम छोटी-छोटी बातों के लिए दूसरों से डिसीजन मांगते हैं। इसलिए कभी दूसरों को डिसीजन नहीं देना चाहिए, क्योंकि उसका डिसीजन, उनका कर्म बनने वाला है। यदि आपने डिसीजन दिया और वह गलत हुआ तो उसके साथ आपका भी कार्मिक एकाउंट जुड़ जाता है। यदि कोई हमसे सलाह मांगे तो हमें उसे ऑप्शन देना है, गाइड करना है न कि किसी को डिसीजन देना है। एक डिसीजन लोगों का भाग्य बनाता है, बदल देता है। यदि खुद का डिसीजन नहीं होगा तो समस्या आने पर वह कमजोर हो जाते हैं। फिर सारा जीवन हमें दोष देते हैं।

# नेताओं के लिए योग, ध्यान और साधना जरूरी : नेता प्रतिपक्ष

## राजनेता सम्मेलन : प्रेरणादायक नेतृत्व के लिए परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति विषय पर आयोजन

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के आनंद सरोवर परिसर में राष्ट्रीय राजनीतिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देशभर से राजनेता, जनप्रतिनिधि, पार्टियों के पदाधिकारियों ने भाग लिया। प्रेरणादायक नेतृत्व के लिए परमात्म शक्तियों एवं वरदानों की प्राप्ति विषय पर आयोजित सम्मेलन में बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि राजनीति करने वाले लोगों के लिए योग, ध्यान और साधना बहुत जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से हमें मानसिक शांति मिलती है। इससे शांति-सुख का मार्ग प्रशस्त होता है। कोई भी धर्म हो सभी का मकसद समाज का उत्थान होता है। पहले की सत्ता में राजगुरु होते थे और उन राजगुरु के हिसाब से सत्ता चलती थी। सत्ता में सबके कल्याण का भाव होना जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो रहा है।

### पहले खुद पर राज करना होगा

उप्र के बुलंदशहर से आए भाजपा अनुसूचित मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री और सांसद डॉ. भोला सिंह ने कहा कि यहां मंत्र दिया जाता है कि यदि हमने अपनेआप पर राज कर लिया तो हम दुनिया पर राज कर सकते हैं। यहां के पवित्र वातावरण का आप सभी भरपूर लाभ लें। एक राजनेता का कर्तव्य धर्म की रक्षा करना भी होता है। मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने आशीर्वचन दिए। अतिरिक्त महासचिव बीके राजयोगी बृजमोहन भाई, प्रशासक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा राजयोगिनी आशा दीदी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। राजनीतिक प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका राजयोगिनी बीके ऊषा दीदी ने कहा कि देशभर से आए राजनेताओं का हृदय से स्वागत है। मैसूर से आए प्रभाग के सक्रिय सदस्य बीके रंगनाथ भाई, बीके ज्ञानेश्वरी बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

**रायपुर (छग)।** छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को ब्रह्माकुमारी आशा दीदी, ब्रह्माकुमारी सविता दीदी, ब्रह्माकुमारी वनिषा दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल समिट का निमंत्रण दिया। इस अवसर पर बीके हीरेन्द्र और बीके महेश भाई भी उपस्थित रहे।

**सारणी (बैतूल/मप्र)।** मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नगर आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ बैतूल की प्रमुख ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने उन्हें तिलक लगाकर साफा पहनाया। साथ ही राखी बांधकर मुख मीठा कराया। इस दौरान सारनी सेवाकेंद्र संचालिका ब्रह्माकुमारी सुनीता बहन भी मौजूद रहीं।

**जयपुर (राजस्थान)।** राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को जयपुर प्रभारी राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर मुख मीठा कराया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने वैशाली नगर सेवाकेंद्र पर आकर राजयोग ध्यान करने की इच्छा व्यक्त की | साथ में बीके चंद्रकला दीदी व अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

**शिमला (हिमाचल प्रदेश)।** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सुखु को ब्रह्माकुमारी रजनी बहन, ब्रह्माकुमारी सुनीता बहन ने रक्षाबंधन का संदेश सुनाते हुए राखी बांधी। साथ ही माउन्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। इस दौरान बीके रितु बहन, बीके श्याम लाल, बीके यशपाल भी मौजूद रहे।

**गंगटोक (सिक्किम)।** मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी सोनम दीदी ने मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग को परमात्म रक्षासूत्र बांधकर सभी को राजयोग ध्यान का महत्व बताया। साथ ही रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्य को बताते हुए राजयोग सीखने की आह्वान किया।

**पणजी, गोवा।** मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत को बीके निर्मला बहन ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राखी का आध्यात्मिक महत्व बताया। साथ ही राजयोग ध्यान को लेकर चर्चा की। इस मौके पर विशेष रूप से बीके संगीता बहन, बीके श्रेया बहन, बीके छगन बहन मौजूद रहीं।

**विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)।** मुख्यमंत्री वाईएस जगनमोहन रेड्डी को राजयोगिनी बीके शांता दीदी ने माउंट आबू से आई परमात्म रक्षासूत्र बांधकर मुख्यालय आने का निमंत्रण दिया। साथ ही राजयोग मेडिटेशन को लेकर चर्चा की। इस मौके पर विशेष रूप से बीके जया दीदी व अन्य भाई-बहनें भी मौजूद रहे।

**नई दिल्ली।** युवा मामले एवं खेल और सूचना एवं प्रसारण केंद्रीय मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर को ओम शांति रिट्रीट सेंटर की ब्रह्माकुमारी विधात्री व अन्य बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राजयोग मेडिटेशन पर चर्चा की। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया।

**मुंबई (महाराष्ट्र)।** महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फड़नवीस को योग भवन, घाटकोपर उपक्षेत्र की राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शकु दीदी ने राखी बांधकर शुभकामनाएं दीं। साथ ही मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण देते हुए संस्थान की सेवाओं के बारे में रुबरु कराया।

**नेपाल।** गण्डकी प्रदेश के मुख्यमन्त्री सुरेन्द्र पांडे को पोखरा की प्रभारी बीके परणीता दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। साथ ही मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया और संस्थान द्वारा की जा रहीं सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया।

**बिदर (कर्नाटक)।** भारत सरकार रसायन-उर्वरक, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री भगवंत खुबा को बीके पार्वती बहन ने राखी बांधकर परमात्मा का स्मृति चिंह भेंट किया। इस मौके पर बीके सपना बहन, बीके कोंडा भाई, बीके बाबूराव भाई भी विशेष रूप से मौजूद रहे।

**देहरादून (उत्तराखंड)।** उत्तराखंड के राज्यपाल गुरमीत सिंह को प्रयागराज की प्रभारी व ब्रह्माकुमारीज के धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय अध्यक्षा बीके मनोरमा बहन ने राखी बांधी। इस मौके पर विशेष रूप से बीके मंजू बहन, बीके सोनिया बहन, बीके शिवानी बहन मौजूद रहीं।

## परमात्म रक्षासूत्र

# प्रधानमंत्री से लेकर मुख्यमंत्री, राज्यपाल, मंत्रियों को बांधी राखी

**नई दिल्ली।** पीएमओ कार्यालय में ओम शांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की निदेशिका बीके आशा दीदी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रहीं सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया। इस मौके पर अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई, बीके हुसैन बहन भी विशेष रूप से मौजूद रहीं। प्रधानमंत्री ने मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी की कुशलक्षेम पूछी और शुभकामनाएं दीं।

**रायपुर (छग)।** छत्तीसगढ़ के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन को ब्रह्माकुमारी आशा दीदी, ब्रह्माकुमारी सविता दीदी और ब्रह्माकुमारी वनिषा दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया। इस दौरान बीके हीरेन्द्र और बीके महेश भाई भी उपस्थित थे।

**लखनऊ (उप्र)।** उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को लखनऊ की प्रभारी बीके राधा दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राजयोग ध्यान पर चर्चा की। इस मौके पर विशेष रूप से बीके मंजू दीदी, बीके चारू दीदी, बीके स्वर्णलता दीदी और बीके शिक्षा दीदी मौजूद रहीं।

**इंफाल (मणिपुर)।** मणिपुर की राज्यपाल अनुसुइया उइके को सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीलिमा दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। इस दौरान राज्यपाल उइके ने भी उन्हें राखी बांधी। साथ ही संस्थान की सेवाओं की सराहना करते हुए विश्व कल्याणकारी बताया।

**पटना (बिहार)।** बिहार के राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर को ब्रह्माकुमारी कंकड़बाग की संचालिका बीके संगीता दीदी ने आत्म स्मृति का तिलक लगाकर परमात्म रक्षासूत्र बांधकर ज्ञान चर्चा की। साथ ही संस्थान द्वारा प्रदेशभर में की जा रहीं नशामुक्ति की सेवाओं के बारे में बताया।

**भुवनेश्वर (ओड़िशा)।** ओडिशा के राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल को बीके गीता दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राजयोग ध्यान के बारे में बताया। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक कल्याण की सेवाओं के बारे में चर्चा की। इस मौके पर बीके त्रिपुरा दीदी, बीके स्मृति दीदी, बीके कविता दीदी, बीके आदित्य मौजूद रहें।

**विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)।** आंध्रप्रदेश के राज्यपाल अब्दुल नज़ीर को बीके जया दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राखी के आध्यात्मिक महत्व के बारे में बताया। बीके पद्मजा दीदी ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया। इस मौके पर बीके राधा, बीके सिरिशा और बीके आनंद भी मौजूद रहे।

**तिरुवनंतपुरम (केरल)।** केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान को राज भवन में बीके मिन्नी बहन ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रदेश में की जा रहीं सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया। राज्यपाल ने संस्था के सेवाकार्यों की सराहना की।

**कोहिमा (नागालैंड)।** नागालैंड के राज्यपाल ला. गणेशन को बीके रूपा दीदी ने रक्षासूत्र बांध कर कहा कि हम सभी के पिता एक ही परमात्मा शिव हैं। ब्रह्माकुमारीज़ में परमपिता शिव को साक्षी मानकर सभी को राखी बांधी जाती है। आत्मा की आंतरिक सुंदरता, दिव्य गुणों की रक्षा के लिए आशीर्वाद दिया जाता है।

**चेन्नई (तमिलनाडु)।** तमिलनाडु के राज्यपाल आरएन रवि को ब्रह्माकुमारीज़ शांतिधाम के निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी बीना दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। इस दौरान बीके मुथुमणि बहन, बीके उमा बहन, बीके देवी बहन, बीके मधन भाई भी उपस्थित रहे।

**शिमला (हिमाचल प्रदेश)।** हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला को उप सेवाकेंद्र सुन्नी की संचालिका बीके शकुन्तला दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया। साथ ही पट्टा पहनाकर सम्मान किया। इस दौरान राज्यपाल ने उपहार स्वरूप पौधा भेंट किया।

**जयपुर (राजस्थान)।** राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र को सबजोन प्रभारी राजयोगिनी बीके सुषमा दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। इस मौके पर वैशाली नगर प्रभारी बीके चंद्रकला दीदी, बीके एकता बहन, बीके सुनेहा बहन, वरिष्ठ पत्रकार राजेश असनानी भी मौजूद रहे।

**भोपाल (मप्र)।** मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगू भाई पटेल को भोपाल जोन की निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी अवधेश दीदी ने माउंट से आईं पवित्र परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। इस दौरान बीके दीपू भाई, बीके अभिलाषा बहन भी मौजूद रहीं।

रियल लाइफ

# जब परमात्मा से मिलने के लिए लोग बेचैन होने लगे

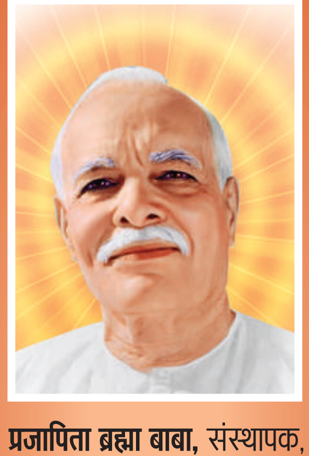

**प्रजापिता ब्रह्मा बाबा,** संस्थापक, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, माउंट आबू

लोग बोलने लगे- प्रभु आ गए हैं तो उनसे मिले बिना कैसे रह सकते हैं?

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

ब्रह्माकुमारी जानकी जी जो कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका हैं लिखती हैं कि 'अब जो लोग ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों पर नित्य प्रति ज्ञान लेते और योगाभ्यास करते थे। उनके जीवन में अलौकिक सुख का अनुभव हुआ तो उनके मन में उमंग पैदा हुई कि हम आत्मा के पिता परमात्मा शिव से मिलें। उनके मन में विचार उठा कि जब इन ब्रह्माकुमारी बहनों का जीवन इतना पवित्र और शान्ति सम्पन्न है। तो स्वयं ब्रह्मा बाबा का जीवन कितना निर्मल और दिव्य गुण सम्पन्न होगा ही।

फिर बहनें जो कहती हैं कि 'ब्रह्मा बाबा के साधारण एवं वृद्ध मानवी तन में सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा अर्थात् 'शिव बाबा' आते हैं और वह ही ब्रह्मा बाबा के मुखाविंद से ज्ञान देकर परमधाम लौट जाते हैं, तो यह कौतुक तो अवश्य ही देखना चाहिए। संसार में इससे अधिक महत्त्वपूर्ण और अद्भुत क्या बात हो सकती है? त्रिलोकीनाथ, सर्वशक्तिवान् परमपिता परमात्मा सूर्य तारागण से भी पार, परमधाम से हम आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान देने और पतित से पावन बनाने का उच्च कर्तव्य करने नित्य प्रति आते हैं तो यह जो थोड़ा-सा फासला हमारे इस नगर से आबू तक का है, यह उस फासले के सामने तो कुछ भी नहीं है। जबकि हमने इस ज्ञान की प्राप्ति द्वारा उसे जाना है, पहचाना और माना है, तब हम तो एक सेकण्ड भी उनसे मिले बिना नहीं रह सकते। हम जिस पिता को जन्म-जन्मान्तर पुकारते थे, मन्दिरों, गुरुद्वारों, तीर्थों, पर्वतों की गुफाओं, निर्जन जंगलों और हृदय की गुहा में ढूँढ़ते थे। अब वह हमारे मन का सच्चा मीत, वह प्रियतम प्रभु आ गया है तो हम उससे मिले बिना एक क्षण भी कैसे रह सकते हैं? उसका परमधाम से आना तो हमारे लिए आल्हाद का विषय है। हमारा मन तो इस तन की रेल यात्रा के लिए भी नहीं रुकना चाहता। बल्कि वह तो आकाश मार्ग से वायुयान की रफ्तार से उड़ने का धीरज भी अब नहीं कर सकता। वह तो सीधे ही वहां पहुंच गया है। परन्तु यह तन भी अब यहां पड़ा रहना नहीं चाहता। इसके रोम-रोम में अब एक नशा बस रहा है और यह भी मन का ही साथ देना चाहता है और उस प्रभु का हो जाना चाहता है।

अतः वे जिज्ञासु ब्रह्माकुमारी बहनों से कहते- बहन जी, अब हम अधिक इन्तजार नहीं कर सकते। हमने इस ज्ञान को समझने में ही इतना समय लगा दिया है, हमें तो यह समय भी अखर रहा है। परन्तु वह कहतीं अभी आप बाबा से मिलने नहीं जा सकते। वहां यज्ञ में वही जा सकता जो ब्रह्मचर्य का पालन करता हो, बाज़ार में बनी चीजें अथवा तामसिक पदार्थ न खाता हो, धूम्रपान न करता हो, जिसने अपने जीवन में अलौकिक परिवर्तन अर्थात् पवित्रता लाई हो, अपनी दृष्टि और वृत्ति को शुद्ध किया हो और जिसे ईश्वरीय ज्ञान में पूर्ण निश्चय हो। हमें शिव बाबा की आज्ञा है कि उनसे मिलने के लिए केवल उन्हीं को ले जाया जा सकता है जो सपूत बच्चे बने हों और जिन्होंने आत्मा के पिता को पहचाना हो।

जिज्ञासु पूछते बहनजी- सपूत बच्चा किसे कहा जाता है और निश्चय-बुद्धि के क्या चिन्ह अथवा लक्षण हैं? बहनें कहतीं 'सपूत बच्चा वह है जो बाप की आज्ञा पर चलता है। बाप की आज्ञा है कि मन, वचन, कर्म से पवित्र बनो तथा योग-युक्त बनो। पवित्रता में ब्रह्मचर्य का पहला स्थान है, क्योंकि उसके बल से ही दूसरे मनोविकारों को भी जीता जा सकता है। उसी के आधार पर ही आत्मा का योग भी परमात्मा से लग सकता है। जो इस पहले नियम का पालन करता है और अपना आहार-व्यवहार शुद्ध करता है, वही शिव बाबा का आज्ञाकारी, सपूत और योग्य बच्चा है, वही उनसे मिल सकता है। ज्ञान में निश्चय होने का प्रमाण मनुष्य के निजी आचरण से मिलता है। यदि किसी मनुष्य को इस ईश्वरीय ज्ञान में निश्चय होगा तो उसके जीवन में अवश्य ही परिवर्तन आया होगा। उसने अपने तमोगुणी स्वभाव को बदला होगा, खराब आदतों को छोड़ा होगा। अब वह ज्ञान के नियमों के अनुकूल चलता होगा। **क्रमशः**

प्रेरणापुंज

# जब डीप अंदर जाने का रस बैठ जाएगा तो बाबा के समीप रहेंगे

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जैसी हूं उसने अपना बना लिया। सेकण्ड में कहा तू मेरी हो, लेकिन सदा उसकी होकर रहने के लिए पिताव्रत, सतीव्रत चाहिए। बाबा से प्यार क्यों है? उसका भी इतना प्यार है। दो हाथ की ताली बजती है। बाबा ने सब कुछ आपे ही दिया है। बाबा हमें सिखाता है कि क्यों-क्या में अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं करो। बुद्धि अच्छा काम करे, दिव्य बुद्धि दाता ने हमारी बुद्धि को दिव्य बनाया है। हमेशा ध्यान रखें - मेरी बुद्धि बाबा तेरे समान बने। दृढ़ संकल्प से एकाग्रता की शक्ति आएगी। फिर विचार सागर मंथन करो तो रत्न निकल आएंगे। जितना गहराई में जाएंगे उतना यहां की सुधबुध भूल जाएगी। लहरों से कौड़ी लेकर खुश हो जाएंगे। जैसे मछली मारने वाले उसमें ही खुश हो जाते हैं, ऐसे हम भी थोड़े में ही खुश हो जाएं हम वह थोड़े ही हैं। हम कोई ऊपर-ऊपर से कौड़ियां इक्ठ्ठी करने वाले नहीं हैं तो बुद्धि को साफ स्वच्छ रखकर दृढ़ता की शक्ति, एकाग्रता की शक्ति से बुद्धि को स्थिर बनाना है। कितना समय बुद्धि को स्थिर बना सकती हूं? बाबा ने यह बहुत प्रैक्टिस कराई।

**राजयोगिनी दादी जानकी,** पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

बच्चे मेरे पास आकर बैठ जाओ। बाबा जो युक्तियां सिखाता है वह करो, ब्रह्मांड में बाबा के पास बैठ जाओ। अव्यक्त स्थिति भी व्यक्त भाव से दूर करने में मदद करती है। व्यक्त भाव, व्यक्त बोल, व्यक्त संकल्प नीचे उतारते हैं। उसमें कभी गमी, कभी खुशी थोड़े समय की खुशी होगी, गमी जल्दी आ जाएगी। उसको मिटाना मुश्किल। बाबा ने कहा सीधा सादा रास्ता बताता हूं जब डीप अन्दर जाने का रस बैठ जाएगा तो बाबा के समीप रहेंगे। फिर कहां भी हों साथ का अनुभव करते रहेंगे। सदा अन्दर अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे। जो पास आएगा उसका भी जी चाहेगा - मैं भी ऐसे रहूं। बातें बहुत आएंगी लेकिन जो बाबा ने सिखाया है, किसी भी आत्मा का, व्यक्ति या वैभव का सहारा नहीं पकड़ो। जैसे चिड़िया तिनके का भी सहारा पकड़ती है ऐसे हमको नहीं पकड़ना है, स्वतंत्र रहना है। एक बल एक भरोसे के आधार से चलना है। जो हमारे संग में होगा उसको वह रंग चढ़ेगा। हमारा फर्ज क्या कहता है? मेरी अपने लिए जिम्मेवारी क्या है? एक सेकण्ड में अन्दर से हर बात को समझकर सहज पार करते जाना। जैसे बाबा ने कहा कोई पहाड़ भी सामने आता है, उसको देखते अपना रास्ता लेकर आगे बढ़ते चलो। कैसी भी बातें आएं अन्दर से अपना रास्ता निकाल लें। हमको मंजिल पर पहुंचना है। बातें तो रूप बड़ा- कुछ भी हो जाए बड़ा धारण करके सामने आएंगी लेकिन हमको टाइम पर पहुंचना है। इतनी युक्ति साइलेंस से निकालनी है। हम तो चलें लेकिन हमको देखकर सबको रास्ता सहज लगे। यदि हम अच्छी तरह से आराम से आगे बढ़ते रहते हैं तो यह भी पुण्य आत्मा बनने का बहुत अच्छा साधन है, युक्ति है, जो हमें देख और भी चलने लगें।

> जैसे चिड़िया तिनके का भी सहारा पकड़ती है ऐसे हमको नहीं पकड़ना है, स्वतंत्र रहना है। एक बल एक भरोसे के आधार से चलना है।

अव्यक्त इशारे

# बाबा कहते हैं बच्चों! मैं ऑफर करता हूं, तुम मुझे प्रयोग करो

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

मैं ओरीजनल आत्मा हूं इस नॉलेज को स्मृति में रखो। वैसे जो भी कोई याद आता है, व्यक्ति या वस्तु याद आती है तो ज़रूर उससे कोई न कोई प्राप्ति होती है। बाबा से क्या-क्या प्राप्ति होती है, वह हमारे सामने इमर्ज होनी चाहिए। कोई किसको लायक बनाता है, तो भी उसकी याद आती है। मैं बेसमझ था, लेकिन इसने मेहनत करके ऐसा योग्य बना दिया। कमाने के योग्य, रॉयल्टी से चलने के योग्य बना दिया। बाबा ने हमको क्या-क्या प्राप्ति कराई है और क्या-क्या बनाया है, यह दोनों ही बातें अगर सदा इमर्ज रहें तो बाबा के साथ का अनुभव अवश्य होगा। अधिकार रखो। बाबा आया किसलिए है! बाबा कहता- मैं ऑफर करता हूं, तुम मेरे साथ को प्रयोग करो। मेरे को यूज़ करो। यह कोई कम बात नहीं है? तो क्यों नहीं हम अधिकार रखें। बाबा बंधा हुआ है। ऐसे नहीं बाबा आपने कहा था ना, आप करेंगे ना? आप करो न ऐसे चिल्लाओ नहीं। हमारा अधिकार है, बाबा बंधा हुआ है। भगवान कभी अपनी प्रतिज्ञा से बदल नहीं सकता। हम बदल सकते हैं, भगवान नहीं बदल सकता। तो अधिकार से बाबा को कहो, बाबा आप जानो। हम सबका बाबा से प्यार है, याद भी है लेकिन इमर्ज रूप में नहीं रहती है। कोई जज है, लेकिन इमर्ज रूप में स्मृति नहीं है कि मैं जज हूं, घर में घरू बन जाएगा, बाप बन जाएगा, भाई बन जाएगा तो वह नशा नहीं होता है। कुर्सी पर बैठने से वह इमर्ज होता है, तो वह नशा रहता है। इसी रीति से बाबा भी कहता है- निश्चय है, नशा है लेकिन मर्ज रहता है, काम में नहीं लाते हैं। कोई भी चीज बढ़िया है लेकिन काम में नहीं लाएं तो वह चीज़ पड़े-पड़े पुरानी हो जाएगी। काम में नहीं लाया तो उसका फायदा तो लिया ही नहीं। बाबा कहते हैं आप सभी बच्चों में शक्तियां, गुण सबकुछ है, नशा भी है प्यार भी है लेकिन टाइम पर यूज़ नहीं करते हो। किसकी आदत होती है चीज़ बहुत अच्छी संभाल कर रखेंगे लेकिन टाइम पर वह याद नहीं आएगी। सामने होते भी नहीं मिलती। परेशान होते रहते। फिर जब समय पूरा हो जाएगा तब याद आएगी। भटकती हुई बुद्धि होती है तो जजमेंट ठीक नहीं होती है। बाबा ने जो पाठ पक्का कराया है कि टाइम पर यूज़ करो। जब बाबा की आफर है कि मैं तुम्हारे साथ हूं तो बाबा की ऑफर आप क्यों नहीं यूज़ करते? बाबा से प्यार तो है न ऐसा कोई नहीं जो कहे मैंने सुना है, लेकिन दिल से प्यार नहीं है। बाबा से सबका दिल से प्यार है। जब प्यार है तो प्यार के साथ प्राप्ति को भी इमर्ज करो। बाबा बार-बार कहते यूज़ करो अर्थात् स्मृति में लाओ। अनुभव में खो जाओ यह है यूज़ करना। यह सहज है या मुश्किल है? सहज करेंगे तो सहज हो जाएगा। मुश्किल कहेंगे तो छोटी चीज़ मुश्किल हो जाती है। बाबा हमें कितने नशे की बातें सुनाते हैं। अगर वह इमर्ज हों, बाबा सागर है तो मैं मास्टर हूं। ऐसे अगर स्मृति आएगी तो स्मृति के नशे से आप असम्भव से सम्भव कर सकते हैं। **क्रमशः**

**राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी (गुलजार दादी),** पूर्व मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

> बाबा बार-बार कहते यूज़ करो अर्थात् स्मृति में लाओ। अनुभव में खो जाओ यह है यूज़ करना। यह सहज है या मुश्किल है?



देशभर में महीनेभर मनाया गया परमात्म रक्षासूत्र कार्यक्रम

# 50 हजार ब्रह्माकुमारियों ने 50 लाख भाइयों की कलाई पर बांधा परमात्म रक्षासूत्र, हर नारी के सम्मान का कराया संकल्प

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी रक्षाबंधन परमात्म रक्षासूत्र महोत्सव के रूप में मनाया गया। महीनेभर चले इस उत्सव में देश-विदेश की 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों ने एक करोड़ से अधिक भाईयों की कलाई पर परमात्म रक्षासूत्र बांधा। साथ ही भाइयों को जीवन में व्यसन-बुराई त्याग कर अच्छाई धारण करने और हर नारी के सम्मान की रक्षा करने का संकल्प कराया। कैदियों को राखी बांधकर जहां अच्छे कर्म करने की प्रेरणा दी तो सैनिकों को राखी बांधकर उनके त्याग, समर्पण और बलिदान की सराहना की। समाज के हर वर्ग तक पहुंचते हुए बहनों ने महीनेभर तक परमात्म रक्षासूत्र महोत्सव मनाया। कई भाइयों ने उपहार स्वरूप नशामुक्ति की दृढ़ प्रतिज्ञा की।

**सांबा, झारखंड।** बीएसएफ छावनी सांबा में ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की ओर से रक्षाबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान ब्रह्माकुमारी बहनों ने डिप्टी कमांडर सुखदेव सिंह सहित सभी जवानों को माउंट आबू से आए परमात्म रक्षासूत्र बांधकर उनके त्याग, समर्पण, साहस की सराहना की।

**मथुरा (उप्र)।** ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से जिला कारागार के कैदियों-बंदियों की सूनी कलाइयों पर बहनों द्वारा परमात्म रक्षासूत्र बांधे गए। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कृष्णा दीदी ने राखी बांधकर सभी को व्यसन-बुराई और अपराध छोड़ने का संकल्प कराया। इस दौरान अधीक्षक बृजेश कुमार, जेलर एमपी सिंह, डिप्टी जेलर करुणेश, बीके आलोक, बीके मनोज मौजूद रहे।

**दिल्ली।** केंद्रीय रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को ओम शांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। साथ ही संस्थान द्वारा की जा रही सामाजिक कल्याण की सेवाओं के बारे में बताया।

**दिल्ली।** केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी को ओम शांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। साथ ही मुख्यालय माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।

**दिल्ली।** लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। इस दौरान अध्यक्ष बिरला ने संस्थान के अपने अनुभव सांझा करते हुए कहा कि राजयोग मेडिटेशन माइंड को पावरफुल बनाने के लिए बहुत जरूरी है।

**रालेगण सिद्धी।** सुप्रसिद्ध समाजसेवी पद्मभूषण अण्णा हजारे को अहमदनगर सेवाकेंद्र प्रभारी राजेश्वरी दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर शुभकामनाएं दीं। इस दौरान उन्होंने मुख्यालय माउंट आबू के अनुभवों को बताया।

**दिल्ली।** केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत को ओम शांति रिट्रीट सेंटर गुरुग्राम की ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। इस दौरान उन्होंने संस्थान के साथ मिलकर चलाए गए जल जन अभियान को सराहनीय कदम बताया।

**दिल्ली।** आवास और शहरी मामलों के केंद्रीय राज्यमंत्री कौशल किशोर को बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर संस्थान द्वारा की जा रही जनकल्याणकारी सेवाओं के बारे में बताया। साथ ही राजयोग ध्यान को अपनाने पर जोर दिया।

**बीकानेर (राजस्थान)।** केंद्रीय कानून और न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल को सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कमल दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा। इस दौरान उन्होंने अपने माउंट आबू आने के अनुभव को सांझा करते हुए अविस्मरणीय बताया।

**दिल्ली।** ब्रह्माकुमारीज़ के सेक्टर-2 सेंटर पर बीके अंजली दीदी, बीके विनीता दीदी के मार्गदर्शन में 101 फीट लंबी राखी बनाई गई, जिसे देखने लोग उमड़ पड़े। बीके रेनू, बीके इंदू, बीके संदीप, बीके अंजलि, बीके विनीता का योगदान रहा।

**मुंबई।** केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री अश्विन कुमार चौबे को ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राजयोग मेडिटेशन के बारे में चर्चा की।

**छतरपुर (मप्र)।** सत्यशोधन आश्रम में बेड़िया समाज एवं घूमतू जाति के बच्चों के लिए विश्वनाथ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके रमा रक्षा सूत्र बांध कर नैतिक मूल्यों का महत्व बताया। साथ ही पढ़ाई में सफलता के टिप्स बताए।

**मुंबई।** लोकप्रिय बॉलीवुड अभिनेता-निर्माता अनिल कपूर को घाटकोपर सबजोन की ब्रह्माकुमारी शकू दीदी ने परमात्म रक्षासूत्र बांधकर राजयोग ध्यान का महत्व बताया। साथ ही माउंट आबू आने का निमंत्रण दिया।

**नोएडा।** जी न्यूज के सलाहकार संपादक और प्रसिद्ध एंकर दीपक चौरसिया को माउंट आबू ज्ञान सरोवर की बीके अदिति बहन परमात्म रक्षासूत्र बांधा। साथ ही पूरे स्टाफ को रक्षासूत्र बांधकर राजयोग ध्यान का महत्व बताया।

# शिखर सम्मेलन में सिखाया राजयोग

## वाई-20 शिखर सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ सदस्यों को किया आमंत्रित

शिव आमंत्रण, वाराणसी (उप्र)

युवा मामले और खेल मंत्रालय, सरकार द्वारा भारत के अंतिम लखनऊ में आयोजित वाई-20 शिखर सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया। संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा जनवरी से अगस्त 2023 तक देशभर में 544 वाई-20 कार्यक्रम आयोजित किए। इनसे 83000 से अधिक युवाओं को मोटिवेट कर राजयोग, स्वास्थ्य और अध्यात्म का संदेश दिया गया।

सम्मेलन में विशेष रूप से अहमदाबाद से युवा प्रभाग की उपाध्यक्ष बीके चंद्रिका दीदी, राष्ट्रीय समन्वयक बीके कृति दीदी, वाई-20 की समन्वयक दिल्ली से बीके विधात्री बहन और बीके वरुण को सरकार द्वारा आमंत्रित किया गया था। वाराणसी और पश्चिम नेपाल की प्रभारी बीके सुरेंद्र दीदी, बीके तापोशी, बीके बिपिन और वाराणसी के अन्य समर्पित भाई-बहनें भी उद्घाटन में शामिल हुए।

शिखर सम्मेलन के उद्घाटन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय युवा मामले, खेल तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर, वाई-20 अध्यक्ष अनमोल सोविट, कैबिनेट मंत्री और मीता राजीवलोचन, सचिव, युवा मामले विभाग, खेल मंत्रालय उपस्थित थे। तीन दिवसीय कार्यक्रम के दौरान बीके प्रतिनिधियों ने शिखर सम्मेलन का आयोजन करने वाले युवा मंत्रालय के विभिन्न अधिकारियों, स्थानीय विधायकों, सांसदों, प्रशासनिक अधिकारियों और विदेशी प्रतिनिधियों से मुलाकात कर राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया।

### ब्रह्माकुमारीज़ व अन्ना विश्वविद्यालय के बीच साइन किया एमओयू

शिव आमंत्रण, चेन्नई | छात्रों के बीच डिजिटल रूप से स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने की दिशा के लिए अन्ना विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारीज़ के बीच एक एमओयू साइन किया गया। इसके तहत डिजिटल वेलनेस को प्रथम वर्ष के इंजीनियरिंग छात्रों को एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाएगा। इस मौके पर कुलपति प्रो.डॉ.आर.वेलराज, रजिस्ट्रार डॉ.जे.प्रकाश, ब्रह्माकुमारीज तमिलनाडु की जोनल निदेशिका बीके बीना दीदी, बीके मुथुमनी दीदी, बीके बाला किशोर, बीके देवी ने भाग लिया।

### भविष्य के भावी कर्णधार तैयार कर रहे शिक्षकों का किया सम्मान

शिव आमंत्रण, सादाबाद, उप्र। ब्रह्माकुमारीज़ 'शिव शक्ति भवन' में शिक्षक दिवस पर शिक्षाविदों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जनपद प्रभारी राजयोगिनी सीता दीदी, बीके भावना दीदी ने सेंट विवेकानन्द स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. जगदीश शर्मा, डॉ. ज्वाला सिंह, जिला अध्यक्ष पूर्व माध्यमिक शिक्षा संघ राजवीर सिंह, प्रो. डॉ. आरएन शर्मा, महाराजा अग्रसेन गर्ल्स कन्या इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्या मंजेशलता, शिक्षक संघ अध्यक्ष सतीश चंद्र रावत, शीतेश , जयप्रकाश पचौरी व अन्य शिक्षक मौजूद रहे।

### राज्यमंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने किया जन्माष्टमी झांकी का उद्घाटन

शिव आमंत्रण, भरतपुर (राजस्थान) | ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र विश्व शांति भवन में कृष्ण जन्माष्टमी की झांकी का उद्घाटन राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने किया। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके कविता दीदी ने अतिथियों का सम्मान किया। महिला बंदी कारागृह सेवर की उप जेलर सुषमा सैन, एडवोकेट बीके अमर सिंह, सैनी समाज एवं अध्यक्ष हलवाई संघ अध्यक्ष बीके जुगल किशोर सैनी, बीके प्रवीणा बहन, बीके पावन बहन,योगिता बहन,जागृति बहन मौजूद रहीं।

### प्रसिद्ध कथावाचक पं. प्रदीप मिश्रा का बहनों ने किया सम्मान

शिव आमंत्रण, राजगढ़/मप्र। राजगढ़ में आयोजित पांच दिवसीय शिव महापुराण कथा के दौरान अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक पं. प्रदीप मिश्रा को ईश्वरीय सौगात प्रदान कर ब्रह्माकुमारी कविता दीदी, ब्रह्माकुमारी सुमित्रा दीदी ने सम्मान किया। बता दें कि पं. मिश्रा कथा के दौरान श्रद्धालुओं को शिव महिमा विस्तार से जानने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र जाने की सलाह देते हैं। इस दौरान आयोजक पूर्व विधायक हरिचरण तिवारी भी मौजूद रहे।

## सार समाचार

शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा बीके सरला दीदी, उपाध्यक्ष बीके राजू भाई के नेतृत्व में प्रभाग के प्रतिनिधिमंडल ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से मुलाकात की। इस दौरान मुख्य रूप से राष्ट्रीय संयोजिका बीके सुनन्दा बहन, बीके तृप्ति बहन, मुख्यालय संयोजक बीके सुमंत, बीके शशिकांत, कोर कमिटी सदस्य बीके बद्री विशाल, बीके राजेश दवे, बीके डॉ. सुनीता पांडे, बीके राजेन्द्र, बीके महेन्द्र, बीके बालासो रूगे, बीके प्रियांका बहन, बीके पारुल बहन उपस्थित रहीं। इस दौरान राष्ट्रपति को शाश्वत यौगिक पद्धति के बारे में विस्तार से बताया।

शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय शांतिवन में आयोजित मीडिया सम्मेलन में हिंदी सेवी संस्था विक्रमशिला हिंदी विद्या पीठ द्वारा मोटिवेशनल स्पीकर वरिष्ठ राजयोगी बीके सूर्य और मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी बीके शांतनु को उनके हिंदी के प्रति विशेष योगदान के लिए विद्या वाचस्पति की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है। यह उपाधि विद्यापीठ के उपकुलसचिव डॉ. श्रीगोपाल नारसन ने बीके चक्रधारी दीदी, बीके सत्येंद्र, बीके रूपेश, फ़िल्म सिटी मुंबई की मैनेजर रहे ओमवीर सैनी, डॉ. पर्मेंद्र देशवाल, केपी चंदेल की उपस्थिति में प्रदान की।

शिव आमंत्रण, नवापारा-राजिम/छग। नवापारा सेवाकेंद्र पर श्रेष्ठ संस्कार के निर्माण में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शहर के शिक्षक-शिक्षिकाओं का सम्मान सेवाकेंद्र प्रभारी बीके पुष्पा दीदी, धार्मिक प्रभाग के जोनल समन्वयक बीके नारायण भाई, बीके प्रिया दीदी ने किया। अतिथि के रूप में सेठ फूलचंद कॉलेज की निदेशिका भावना अग्रवाल मौजूद रहीं।

शिव आमंत्रण, आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ के मानपुर स्थित ज्ञानदीप सेवाकेंद्र पर परमात्म रक्षासूत्र कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें शिक्षा प्रभाग द्वारा चलाए जा रहे राइस (राइजिंग इंडिया थ्रो स्प्रीचुअल इम्पॉवरमेंट) कैंपेन की भी लांचिंग की गई। सेवाकेंद्र प्रभारी बीके भारती दीदी और सीमा दीदी ने सभी को रक्षासूत्र बांधा। कार्यक्रम में नपा अध्यक्ष मगनदान चारण, भाजपा जिला उपाध्याय शैलेश प्रजापति, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके रुक्मिणी दीदी, श्रीनाथ बीएड कॉलेज की प्राचार्या शशि उपाध्याय, सरपंच ललिता देवी, चनर उच्च माध्यमिक स्कूल के प्राचार्य अशोक मौजूद रहे।

**शिव आमंत्रण, सदस्यता हेतु संपर्क करें-**

वार्षिक मूल्य 150 रुपए तीन वर्ष 450 रुपए
आजीवन 3500 रुपए
मो 9414172596, 8521095678
Website www.shivamantran.com

**पत्र व्यवहार का पता**

संपादक ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो 8538970910, 9179018078
Email shivamantran@bkivv.org

**For online transfer**

A/C Name: Rajyoga Education & Research Foundation
A/C Number: 35401958118, IFSC Code: SBIN0010638
Bank & Branch: State Bank Of India, PBKIVV, Shantivan, Abu Road, Rajasthan
Note: On transfer please email details to: shivamantran.acct@bkivv.org, Helpline: 6377090960

Scan To Pay



**स्व प्रबंधन** आध्यात्मिक ज्ञान से मन सकारात्मक चिंतन की ओर जाता है

# सकारात्मक चिंतन और मेडिटेशन रूपी एक्सरसाइज से मन बनेगा शक्तिशाली

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

जिस प्रकार शारीरिक तंदरूस्ती के लिए शारीरिक व्यायाम आवश्यक है, उसी प्रकार मन को शक्तिशाली बनाने के लिए मन की एक्सरसाइज़ जरूरी है। मन के लिए एक्सरसाइज है सकारात्मक चिंतन। आज के युग में मानव का मन नकारात्मक दिशा में बहुत जल्दी और सहज मुड़ जाता है। सकारात्मक चिंतन करने के लिए मेहनत लगती है। इसका कारण यह है कि मन को सकारात्मक चिंतन करने के लिए शुद्ध और श्रेष्ठ विचारों की खुराक देना आवश्यक है। सकारात्मक चिंतन के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की खुराक ही हमारे जीवन की गुमशुदा कड़ी है।

**राजयोगिनी ऊषा दीदी,**
वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,
माउंट आबू

जैसे ही व्यक्ति को स्वास्थ्य की जागृति आती है, तो दिनचर्या में थोड़ा सा परिवर्तन कर लेता है और सब कुछ व्यवस्थित चलता है। इसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य की जागृति आ जाती है तो दिनचर्या में थोरा सा परिवर्तन करना मुश्किल नहीं होता। जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान की भूमिका को समझने से और उसको अपने जीवन में शामिल कर समझने से आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण करता है तो मन स्वतः ही सकारात्मक दिशा की ओर आकर्षित होता है। आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण करने के लिए व्यक्ति को न अपना कर्तव्य छोड़ना है। और न अपनी ज़िम्मेवारियों को छोड़ना है। आत्मा को सकारात्मक चिंतन से सशक्त करने से जीवन सुव्यवस्थित हो जाता है। बड़े से बड़ी परिस्थिति या समस्या आने पर भयभीत या घबराहट में आकर नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के बजाय, वह सशक्त और सन्तुलित मनः स्थिति से सकारात्मक दृष्टिकोण और चिंतन को अपनाकर, अपनी रचनात्मक सूझबूझ के साथ सबकुछ सहज ही पार कर सकता है।

### मन को आराम देने का अचूक साधन है राजयोग

इसी प्रकार मन को आराम देना भी जरूरी है। व्यक्ति रात को थककर सो तो जाता है, लेकिन उसका मन सूक्ष्म स्तर पर कार्य करता रहता है चाहे स्वप्न के रूप में, चाहे विचारों के रूप में, वह तो सारी रात कार्यरत रहता है। इसलिए व्यक्ति जब सुबह उठता है तब भी उसे ताज़गी का एहसास नहीं होता, लेकिन वह स्वयं थका हुआ महसूस करता है क्योंकि उसका मन थका होने के कारण किसी कार्य पर एकाग्र नहीं हो सकता। न ही उसके मन में रचनात्मक विचार आते हैं। कई बार तो जैसे उसे कुछ सूझता ही नहीं है। समस्या और परिस्थिति आने पर भी उसे समय का बोध नहीं रहता इसलिए कई बार स्पर्धा के युग में वह सफल नहीं हो पाता। तब व्यक्ति अवसादग्रस्त एवं नाउम्मीद हो जाता है, मनोबल टूटने लगता है। मन में नकारात्मक विचार पनपने लगते हैं और वह सोचता है कि वह किसी काम का नहीं, वह जीवन में कुछ नहीं कर सकता और इन्हीं विचारों के कारण उसे रात भर नींद नहीं आती। ये नकारात्मक विचार उसे डिप्रेशन का शिकार बना देते हैं।

राजयोग मन को आराम देने की ऐसी रामबाण औषधि है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने प्रयास द्वारा मन को शांत कर सकता है। परन्तु जब व्यक्ति डिप्रेशन का शिकार होता है उस समय राजयोग का अभ्यास भी उसे मुश्किल लगता है। इसलिए इसका अभ्यास तो व्यक्ति को स्वस्थ रहने पर ही शुरू कर देना चाहिए। तब उसका मन सदा ताजगी से भरा हुआ, रचनात्मक एवं प्रसन्नता से भरपूर अनुभव करेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो उसको अपने मन को मित्र बना लेना होगा। हमारा यह कहने का अभिप्राय नहीं है कि डिप्रेशन वाला व्यक्ति कभी मेडिटेशन कर ही नहीं पाएगा परन्तु उसके लिए समय अधिक लगेगा। धैर्यता के साथ धीरे-धीरे अभ्यास करने पर वह उस स्थिति से बाहर आ सकता है। मेडिटेशन को पहले से ही जीवन शैली में शामिल कर लेने से सद्विवेक की शक्ति बहुत तेज़ हो जाती है।

**अध्यात्म की उड़ान** पांडव भवन के कण-कण में विद्यमान है परमात्मा की ऊर्जा

# पहले अपवित्रता को जलाना होगा तब ही पवित्रता का रंग चढ़ेगा...

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

सभी स्थिर हो जाएं और आंखें बंद कर लें। मन से शांति स्तंभ पहुंच जाएंगे। मैं आत्मा शांति स्तंभ के सामने बैठी हूं और मुझमें शांति की प्राण ऊर्जा भर रही है। ज्ञान की ऊर्जा, शक्ति की उर्जा, पवित्रता की ऊर्जा, शांति स्तंभ के इर्द-गिर्द जो प्राण ऊर्जा प्रभावित है, एक विशिष्ट ऊर्जा है मैं उसकी अनुभूति कर रही हूं। अब मैं आत्मा हिस्ट्री हॉल में एक विशिष्ट सुगंध, एक अनोखी ऊर्जा शरीर में अविरल धारा बह रही हैं, रोम-रोम पुलक से भर रहा है। बाबा का कमरा जहां एक अदिति जीवन ऊर्जा है, प्राण ऊर्जा है, डिवाइन अनुभूति कर रही हूं। मेरे संपूर्ण शरीर में सिर से पैर तक प्राण ऊर्जा प्रभावित हो रही है। शरीर में लाइटनेस, हल्का पन अनुभव हो रहा है। बाबा की कुटिया प्रचंड, आलोक से भर रहा है। यहां प्रचंड, आलोक का वायुमंडल है, मेरा संपूर्ण शरीर लाइट से भर रहा है। मेरे शरीर में प्रकाश ही प्रकाश चमक रहा है, दिव्य प्रकाश से भर रहा है। शरीर का एक-एक अंग दिव्य प्रकाश से आलोकित हो रहा है। अब मैं आत्मा मेडिटेशन हॉल में पहुंच गई हूं। जहां पर एक विशिष्ट ऊर्जा कहीं नहीं है। वह अमृतवेला का संगठित योग, मुरली क्लास का संगठित योग, नुमाशाम संगठित योग की ऊर्जा का अनुभव कर रही हूं। अब मैं आत्मा मधुबन के आंगन में पहुंच जाती हूं। जो सृष्टि की महान आत्माएं जड़ हैं, तना हैं, श्रेष्ठ रचना हैं, वहां पर चलते-फिरते फरिश्तों की ऊर्जा है, उस ऊर्जा को मैं अनुभव कर रही हूं। अब मैं आत्मा ओम शांति भवन में पहुंच जाती हूं, जहां की हवाओं में परमात्मा प्रभु की ऊर्जा है, परमात्मा के महावाक्य से सारा भवन झूम उठा है, यहां विचित्र ऊर्जा है। मैं यहां की ऊर्जा पूरे शरीर में प्राण वायु को भरती जा रही हूं। अब मैं आत्मा मधुबन के आंगन में पहुंच जाती हूं। जो सृष्टि की महान आत्माएं जड़ है, तना है, श्रेष्ठ रचना है, वहां पर चलते-फिरते फरिश्तों की ऊर्जा है, उस ऊर्जा को मैं अनुभव कर रही हूं। अब मैं आत्मा ओम शांति भवन में पहुंच जाती हूं, जहां की हवाओं में परमात्मा प्रभु की ऊर्जा है, परमात्मा के महावाक्य से सारा भवन झूम उठा है, यहां विचित्र ऊर्जा है। मैं यहां की ऊर्जा पूरे शरीर में प्राण वायु को भरती जा रही हूं। अब मैं आत्मा ओम शांति भवन के नीचे बैठ जाती हूं, जहां सभी एक ही लक्ष्य, एक ही पुरुषार्थ के ऊपर पुरुषार्थी हैं। असंभव से संभव की ओर यात्रा में लीन है, ऊर्जा से परिपूर्ण हैं। मेरे मन, मेरी बुद्धि, मेरा संस्कार अत्यंत दिव्य है। मेरे रोम रोम में एक निष्कलंक, पवित्रता, अखंड, ब्रह्मचर्य को धारण करने वाले मैं शक्ति हूं, मैं एनर्जी हूं, मैं उर्जा का अवतार हूं। मैं इस सृष्टि का केंद्र हूं।

**डॉ. बीके सचिन भाई,**
राजयोग एक्सपर्ट,
माउंट आबू

बाबा के महावाक्य- पहले होली बनने के लिए अपनी अपवित्रता को जलाना है, जब तक अपवित्रता को समाप्त नहीं करेंगे, तब तक पवित्रता का रंग चढ़ नहीं सकता। पवित्रता की दृष्टि से रंग का उत्सव मना नहीं सकते। भिन्न-भिन्न उमंग-उत्साह से एक ही परिवार के, एक ही संबंध के अर्थात् भाई-भाई की दृष्टि से उत्सव मना नहीं सकते।

15 मार्च 1984 की मुरली है- पानी में दो चीजें होती हैं इंफॉर्मेशन और मेमोरी। पानी रिटर्न करता है, याददाश्त होती है, पानी में सूचनाएं होती हैं। इस सारी सृष्टि में 90% पानी है। हमारे शरीर में भी 90% पानी है। पानी एक सुपर कंप्यूटर है, इससे सबकुछ जुड़ा हुआ है। सृष्टि का सारा पानी एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। पानी में ऊर्जा है, लाइट है, पानी में जो हम थॉट, संकल्प देंगे उस पर पानी कार्य करेगा। **संकल्प से पानी को चार्ज करने की 10 विधियां हैं जो अगले अंक में जानेंगे।**

**समस्या- समाधान**

# दिन में कम से कम सात बार विशेष योगाभ्यास करें

शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।

> "दिन में कई बार सहज समाधि का अभ्यास करना जरूरी है"

अब दिनचर्या में इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि यदि अधिक न भी हो सके तो सायंकाल तक कम-से-कम सात बार विशेष रूप से ईश्वरीय स्मृति में बैठने का समय मिले, ताकि प्रतिदिन ईश्वरीय स्मृति में आठ घंटे स्थित होने का ईश्वरीय निर्देश यदि हम पूरा न भी कर सकें तो कम से कम 3-4 घंटे हर हालत में इसका अभ्यास करें। देखा गया है कि जो मनुष्य लौकिक अथवा स्थूल कार्यों में दिनभर लगातार लगा रहता है और इसमें अपनी बुद्धि, कर्मेन्द्रियों को इस प्रकृति के जगत से हटाकर प्रभु की ओर लगाने का अभ्यास नहीं करता, उसका पुरुषार्थ तीव्र नहीं हो पाता। अतः चाहे कैसा भी व्यस्त जीवन क्यों न हो दोनों बार भोजन करने से कुछ पहले एवं भोजन के समय, प्रातः उठते ही और रात्रि को भी सोने से पहले, संध्या और रात्रि को क्लास में अथवा घर पर, एक बार दोपहर में कम-से-कम सात बार और 15-15 मिनट तो ईश्वरीय स्मृति का अभ्यास करना ही चाहिए।

जब भोजन हमारे सामने परोसा जाए तो उससे पहले ही स्व-स्थिति एवं प्रभु-स्मृति में बैठने से अवस्था अव्यक्त बनी रहती है।

**- राजयोगी बीके सूरज भाई,**
माउंट आबू

देखा गया है कि मनुष्य व्यस्तता के अनेक बहाने बनाकर योगाभ्यास के इन स्वर्णिम अवसरों को खो देता है। इससे न केवल यह हानि होती है कि उसके योग की सूक्ष्मता आगे-आगे नहीं बढ़ती बल्कि योग का अभ्यास टूट जाने से और छूट जाने से उसकी अवस्था व्यक्त होने लगती है और वह व्यवहारी और संसारी बनने लगता है। अतः अन्य कार्यों से भी इसे आवश्यक समझकर जन्म-जन्मान्तर की कमाई का साधन मानकर, ईश्वर द्वारा दिया निर्देश जानकर, चाहे कैसे भी बन पाए समय निकालना ही चाहिए। मनुष्य को ऐसे ही समझ लेना चाहिये कि प्रभु का तार आ गया है, ट्रंक कॉल आ गया है अथवा मेरे लिए कोई आवश्यक संदेश आ गया है अथवा आना है। मैं चलते-फिरते, उठते-बैठते योग लगा लूंगा ऐसा सोचकर विशेष तौर पर प्रभु-मिलन के लिए बैठने और योग अभ्यास करने को छोड़ देना हानिकारक है। कार्य करते हुए भी ईश्वरीय स्मृति में रहने का पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए परन्तु इसके अतिरिक्त विशेष तौर पर दिनभर में कई बार सहज समाधि का अभ्यास अथवा अनुभव करने से स्थिति अच्छी बनी रहती है।

### सावधानी देने वालों से संपर्क बनाए रखें-

अवस्था में कुछ कमज़ोरियां आ जाने का एक कारण यह भी होता है कि मनुष्य को सावधानी देने वाले, उसकी त्रुटियां उसे बताने वाले और उसकी स्थिति को फिर से ठीक रखने, निर्देश देने और अंकुश में रखने वाले से उसका सम्पर्क टूट जाता है। जब तक मनुष्य की अवस्था सम्पूर्ण और निर्दोष न हो जाए तब तक उसे अवश्य ही किसी ऐसे निर्देशक की आवश्यकता रहती ही है जो उसकी उन्नति के लिए, हित की बात बताए। परन्तु देखा गया है कि कुछ लोग थोड़ा-सा भी ईश्वरीय ज्ञान सुनने के पश्चात और सेवा में जुटने के बाद ऐसा कोई संग नहीं बनाए रखते। वे किसी को भी अपनी अवस्था का सारा हिसाब खोलकर नहीं बताते जिससे कि आगे के लिए उन्हें दिशा-निर्देश मिले। इसका परिणाम यह होता है कि वे स्वयं या तो अपनी कमियों को देख नहीं पाते या उन्हें दूर नहीं कर पाते और उसके परिणाम स्वरूप उन्हें यह देखकर निराशा होती है कि उनकी कोई प्रगति नहीं हो रही। या वे स्वयं में ही मिथ्या तुष्टि का अनुभव करते हुए जहां खड़े थे, वहीं खड़े रहते हैं। अतः उत्तरोत्तर उन्नति चाहने वाले मनुष्य को अपने पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए अपनी अवस्था का ब्यौरा देना जरूरी है।

### नाम, मान, शान अथवा प्राप्ति की आकांक्षा-

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ईश्वरीय सेवा तो करते हैं परन्तु साथ-साथ अपने कार्य के फलस्वरूप नाम अथवा यश पाने की आकांक्षा करते हैं। जो सेवा वे करते हैं उसमें वे नम्र भाव से, स्वयं को एक सेवाधारी अथवा निमित्त साधन मानने की बजाय, एक कुशल और योग्य कार्यकर्त्ता मानने लगते हैं और प्रतिष्ठा, सुविधा और सत्कार पाने की आकांक्षा मन में रख लेते हैं। यदि उनकी यह इच्छा पूरी होती जाए तो वे इसमें और भी अधिकाधिक फंसते जाते हैं अर्थात् और अधिक यश प्राप्त करने की लालसा से उनके पास योगाभ्यास व पुरुषार्थ के लिए न तो एकान्त और शान्त में बैठने का समय बच पाता है और न ही आत्म-चिन्तन और आत्म-निरीक्षण की टेव उन्हें रहती है।

यदि उन्हें मान और मर्तबा न मिले तो वे रुष्ट और खिन्न-चित्त हो जाते हैं। दिन-प्रतिदिन इस भाव से ईश्वरीय सेवा को छोड़ते जाते हैं कि हमारे किए हुए कार्य का कोई मूल्य ही नहीं अथवा उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता। इस प्रकार उत्तरोत्तर अपनी बुद्धि को सेवा के कार्य से खाली करके, वे उल्टे संकल्पों और विकल्पों में लगाकर अपनी अवस्था को गिराने लगते हैं। क्रमशः

# बीमारियों को आमंत्रित करते हैं हमारे नकारात्मक संकल्पः शिवानी दीदी

## ज्ञान सरोवर में माइंड, बॉडी, मेडिसिन नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित

**शिव आमंत्रण, माउंट आबू (राजस्थान)**

मेडिकल विंग की ओर से ज्ञान सरोवर परिसर में तीन दिवसीय माइंड, बॉडी, मेडिसिन नेशनल कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। इसमें देशभर से 500 से अधिक डॉक्टर्स ने भाग लिया। शुभारंभ पर संबोधित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर बीके शिवानी दीदी ने कहा कि अधिकतर व्याधियों की उत्पति मानव अपने कमजोर मन से करता है। नकारात्मक संकल्प बीमारियों को आमंत्रित करते हैं। सकारात्मक सोच व दृष्टिकोण से मन में अलौकिक ऊर्जा की रचना बढ़ती है। इस संसार के विचारों की दुनिया से परे निर्विचार की दुनिया की अनुभूति करने से कर्मक्षेत्र के हर कर्म यथार्थ होने लगेंगे। आध्यात्मिक विचारों के आकाश में उड़ान भरने से अद्भुत परमात्म शक्तियों की वर्षा होने से मन का मैल धुलने लगेगी।

उन्होंने कहा कि वसुधैव कुटुम्बकम की इच्छाओं को मन में स्थान देने से विश्वकल्याण की भावनाओं को मूर्तरूप दिया जा सकता है। मन को कलुषित करने वाले आदतें व संस्कारों के प्रभाव से शारीरिक व्याधियों को बल मिलता है। इसलिए मन को उन आदतों से किनारा करने के लिए ईश्वरीय चिन्तन की नई आदतों को प्राथमिकता देनी होगी।

### मौन से प्रकट होता है सत्य-

शिवानी दीदी ने कहा कि जीवन में सत्य की खोज केवल किताबी ज्ञान से ही संभव नहीं है। इसके लिए मन को व्यर्थ विचारों के मौन की आवश्यकता है। अपने मन में मौन के संकल्पों को स्थान देने से अदभुत अलौकिक शक्ति का अवतरण होगा। आत्म-अनुभूति करना ही धर्म की वास्तविक परिभाषा है। देह के धर्मों में स्थित होकर सत्य को नहीं खोजा जा सकता है। मुंबई से आए डॉ. सचिन परब ने कहा कि सुप्रीम सर्जन परमात्मा शक्तियों की अनुभूति करने को मन को अध्यात्मिक विचारों की दुनिया में जीने की परिपाटी बनानी होगी। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके सूर्य ने भी संबोधित किया।

### कलियुग-सतयुग की बॉर्डर पर खड़े हैं

बिहार विधानसभा नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि मानवता के कल्याण की जिम्मेवारी को सूक्ष्म रूप से युग परिवर्तन का कार्य ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से किया जा रहा है। इसी धरती पर देवाताओं का वास था। हम कलियुग और सतयुग की बॉर्डर लाईन पर खड़े हैं। संसार को ब्रह्माकुमारी संगठन से महान प्रेरणाएं मिल रही हैं। संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. निर्मला दीदी, डॉ. गिरीश पटेल, वारंगल से आए रोटरी प्रांतपाल डॉ. चंद्रशेखर आर्य, डॉ. वाई. पदमा, ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, मेडिकल विंग के सचिव डॉ. बनारसीलाल ने भी संबोधित किया।

## बीके मंजू दीदी उत्तराखंड रत्नश्री अवार्ड से विभूषित

**शिव आमंत्रण, देहरादून (उत्तराखंड)।** ब्रह्माकुमारीज़ के देहरादून सर्किल प्रभारी बीके मंजू दीदी को देहरादून-इंटरनेशनल गुडविल सोसायटी ऑफ इंडिया के उत्तराखंड चैप्टर की ओर से उत्तराखंड रत्नश्री से विभूषित किया गया। उन्हें यह अवार्ड उत्तराखंड के विकास में सतत योगदान एवं आध्यात्मिकता के रास्ते आमजन में चरित्र निर्माण की प्रेरणा जागृत करने जैसी उपलब्धियों के लिए प्रदान किया गया है।

## किसान यौगिक खेती पद्धति को अपनाकर कमा सकते हैं मुनाफा

**शिव आमंत्रण, शाजापुर (मप्र)।** कृषि विज्ञान केंद एवं ब्रह्माकुमारी के शिव वरदानी धाम द्वारा किसानों के लिए गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक व कृषि विज्ञान केंद के संचालक डॉ. जी.आर.अम्बावतीया ने किसानों को उन्नत खेती के गुर बताए। सेवाकेंद संचालिका बीके पूनम बहन, बीके चंदा बहन ने किसानों को यौगिक खेती के गुर बताए और अपनाने की सलाह दी। संचालन बीके दीपक ने किया।

## कठिन परिस्थितियों में भी चैन की बंसी बजाने की कला सिखाते हैं मुरलीधर श्रीकृष्ण : बीके शैलजा दीदी

**शिव आमंत्रण, छतरपुर (मप्र)।**

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के छतरपुर सेवाकेंद्र किशोर सागर द्वारा श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर श्रीकृष्ण की चैतन्य झांकी का आयोजन किया गया। शुरुआत श्रीकृष्ण की आरती से की गई। इस अवसर पर नन्हें-मुन्नें बाल कलाकारों द्वारा रासलीला का मंचन एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां प्रस्तुत की गईं जो सभी के आकर्षण का केंद्र रहीं।

सेवाकेंद्र प्रभारी बीके शैलजा ने कहा कि हमें केवल श्रीकृष्ण की लीलाओं को देखकर खुश नहीं होना चाहिए बल्कि हमें उनकी तरह अपने जीवन में गुण ग्राहकता का गुण लाना चाहिए। सभी से गुण रूपी माखन चुराना चाहिए। उनकी मुरली की तरह अपने मुख से भी ज्ञान रूपी मीठी मुरली ही बजाना चाहिए जो सभी के दिलों को छू ले और ऐसी वाणी हो

हमारी जो सभी को सुख देने वाली हो। जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराने की कला श्री कृष्ण से हमें सीखनी चाहिए।

इस अवसर पर हनुमान टोरिया सेवा समिति एवं योग स्टार परिवार के गिरजा पाटकर सहित सभी ग्रुप मेंबर्स एवं सभी श्री कृष्ण प्रेमी भाई-बहनें उपस्थिति रहे। अंत में बीके रमा ने सभी बच्चों को माखन मिश्री खिलाया तत्पश्चात सभी भक्तगणों को प्रसाद ग्रहण कराया गया। सभी भाई बहनों के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी। सभी ने झांकी सराहना की।

## सार समाचार

शिव आमंत्रण, भरतपुर (राजस्थान)। भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ के भरतपुर आगमन पर बीके कविता दीदी, बीके प्रवीणा दीदी, बीके रणवीर भाई ने मुलाकात कर संस्थान द्वारा की जा रहीं सेवाओं के बारे में बताया। साथ ही राजयोग ध्यान पर चर्चा की।

सीतामढ़ी (बिहार)। ब्रह्माकुमारीज़ के बेला, शांति कुटीर नानपुर स्थित ब्रह्माकुमारी पाठशाला पर शिक्षक दिवस पर 60 से अधिक शिक्षकों का सम्मान किया गया। अतिथि के रूप में डॉ. रेणु चटर्जी, पुपरी अनुमंडल के डीसीएलआर ललित बाबू, एसएसबी 20वीं बटालियन के कमांडेंट की धर्मपत्नी रेनू पांडे मौजूद रहीं। सेवाकेंद्र संचालिका बीके वंदना दीदी ने राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित शिक्षक रामज्ञान यादव, हरिनारायण राय, राज किशोर राउत व सभी शिक्षक- शिक्षिकाओं का सम्मान किया।

शिव आमंत्रण, कादमा (हरियाणा)। हरियाणा सरकार द्वारा ड्रग फ्री हरियाणा थीम को लेकर चल रही साइकिल यात्रा साइक्लोथॉन के बिन्द्रावन पहुंचने पर क्षेत्रीय प्रभारी बीके वसुधा बहन, बीके ज्योति बहन व ब्रह्माकुमार भाई-बहनों ने साईकिल यात्रियों का तिलक, फूल माला पहनाकर स्वागत किया।

शिव आमंत्रण, वीरगंज (नेपाल)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महापर्व पर राजयोग सेवाकेन्द्र पर चैतन्य झांकी लगाई गई। इसका उद्घाटन क्षेत्रीय प्रमुख बीके रवीना दीदी, मधेश प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री व प्रदेश सभा सदस्य लालबाबू राउत ने किया। कार्यक्रम में रवीना दीदी ने कहा कि श्री कृष्ण ने भी अपनी पूर्व जन्म में ईश्वरीय ज्ञान की धारणा और राजयोग ध्यान साधना का अभ्यास कर इतने महान महिमा योग्य स्वरुप को प्राप्त किया था।

जगदलपुर (छत्तीसगढ़)। ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर तनाव मुक्त क्रोध मुक्त जीवन विषय पर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें माउंट आबू से आए बीके भगवान भाई ने कहा कि मन में चलने वाले नकारात्मक विचार, शंका, कुशंका, ईर्ष्या, घृणा, नफरत अभिमान के कारण ही की उत्पति होती है। इस मौके पर पूर्व विधायक लच्छुराम कश्यप, रोटरी क्लब अध्यक्ष दिनेश कागोल, विवेक सोनी, सेवाकेंद्र संचालिका बीके मंजूषा बहन, बीके रामा बहन, बीके सपना बहन, बीके चंद्रमणि बहन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन पर राजयोग ध्यान का अभ्यास कराया गया।



# पूरी मानवता के कल्याण के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान का कार्य सराहनीय है : राष्ट्रपति

## मुख्यमंत्री, राज्यपाल सहित शहर के गणमान्य लोगों ने लिया भाग

**शिव आमंत्रण, रायपुर (छग)**

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वार्षिक परियोजना-सकारात्मक परिवर्तन वर्ष का शुभारम्भ राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, राज्यपाल बिश्वभूषण हरिचन्दन, मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय भाई, क्षेत्रीय निदेशिका बीके हेमलता दीदी, ज्यूरिष्ट प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक बीके नथमल भाई, शिक्षाविद प्रभाग की एडीशनल डायरेक्टर बीके लीना, बीके आशा और बीके सविता दीदी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम शान्ति सरोवर परिसर में आयोजित किया गया। इसमें मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक सहित बड़ी संख्या में अधिकारी और गणमान्य लोग उपस्थित थे।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सभी को जय जोहार! के साथ अपने सम्बोधन की शुरूआत करते हुए कहा कि पूरी मानवता के कल्याण के लिए ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा अनेक कार्यक्रम किए जा रहे हैं। मनुष्य की सोच और व्यक्तित्व में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए ऐसे कार्यक्रम शुरू कर यह संस्थान बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। मैं इसके लिए संस्था को बधाई देती हूं। उन्होंने छात्रों को धैर्य और कड़ी मेहनत के साथ अपनी रुचि के क्षेत्र में प्रयास करने और कभी निराश न होने का सन्देश दिया।

राष्ट्रपति ने कहा कि मुझे लगता है कि इस पॉजीटिव थीम की सहायता से हम उन बच्चों की मदद कर सकते हैं जो तनाव में आधी-अधूरी जिंदगी जीकर चले जाते हैं। हर बच्चे में अपनी विशिष्ट प्रतिभा है। अपनी रुचि को जानकर इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। इस दिशा में अध्यात्म उनकी मदद कर सकता है। हमारे ब्रह्माकुमारी परिवार के सदस्य कई बरसों से इस दिशा में काम कर रहे हैं। मेरी आध्यात्मिक यात्रा में भी ब्रह्माकुमारी संस्था ने मेरा बहुत साथ दिया है। जब मेरे जीवन में कठिनाई थी तब मैं उनके पास जाती थी। ब्रह्माकुमारी का रास्ता मुझे बहुत अच्छा लगा।

उन्होंने कहा कि आप सहजता से काम करते हुए आप अपनी जिंदगी को बेहतर तरीके से जी सकते हैं। जिंदगी जीने की कला वहाँ पर सिखाते हैं। हम केवल एक शरीर नहीं एक आत्मा हैं। परमपिता परमात्मा का अभिन्न अंग है। ब्रह्माकुमारीज़ दुनियाभर में शांति के लिए कार्य कर रही है। यह संगठन दुनिया को बेहतर बनाने में अपना अमूल्य योगदान दे रहा है। छत्तीसगढ़ में ब्रह्माकुमारी संगठन ने जो काम आरंभ किया है मैं उसके लिए संस्थान को बधाई देती हूँ। स्वर्णिम युग का स्वप्न जो हम देख रहे हैं रामराज्य के लिए हमें राम बनना होगा, सीता बनना होगा।

### सकारात्मक सोच से हर चुनौती का सामना संभव : राज्यपाल

राज्यपाल बिश्वभूषण हरिचन्दन ने कहा कि सकारात्मक सोच अपनाकर हम दुनिया की किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं। सकारात्मक परिवर्तन का यह वर्ष आप सभी के जीवन में सुखद बदलावों का साक्षी बने और समाज खुशहाल रहे तथा हमारा देश हर तरह से समृद्ध हो। ब्रह्माकुमारीज़ में दूसरों को बदलने के बजाय स्वयं परिवर्तन पर जोर दिया जाता है जो कि सराहनीय है। मुझे लगता है कि आपकी संस्था आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के कार्य में सकारात्मक भूमिका निभा सकती है।

### जैसे कोई अपना, अपने ही घर आया : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि राष्ट्रपतिजी का आगमन छत्तीसगढ़ के लोगों के लिए बहुत ही गौरव का क्षण है। पूरे देश की मुखिया के आगमन से छत्तीसगढ़ के लोग आत्मीयता का अनुभव कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कोई अपना, अपने ही घर आया है। यह प्रदेश एक आदिवासी प्रदेश है, अनुसूचित जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के लोग भी बहुत बड़ी संख्या में यहां निवास करते हैं। यह प्रदेश किसानों का प्रदेश है।

## बिलासपुर आगमन पर सेवाकेंद्र संचालिका बीके स्वाति दीदी ने राष्ट्रपति का किया सम्मान

**बिलासपुर(छ.ग.)।** गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के दशम दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बिलासपुर प्रवास पर पहुंचीं। इस दौरान ब्रह्माकुमारी मुख्य शाखा राजयोग भवन की संचालिका बीके स्वाति दीदी ने राष्ट्रपति को गुलदस्ता एवं सौगात देकर अभिनंदन किया। साथ ही नगर में संस्थान द्वारा की जा रही आध्यात्मिक व सामाजिक सेवाओं के बारे में बताया। इस पर राष्ट्रपति ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि सामाजिक कल्याण के लिए अध्यात्म ही एकमात्र रास्ता है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी मौजूद रहे।

## मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखना बेहद जरूरी है

**शिव आमंत्रण, जबलपुर (मप्र)।** ब्रह्माकुमारीज़ के कटंगा कॉलोनी सेवाकेंद्र की ओर से चार्टर्ड एकाउंटेंट्स की संस्था आईसीएआई की जबलपुर शाखा के लिए हेल्थी माइंड हेप्पी लाइफ विषय पर व्याख्यान माला आयोजित की गई। इसमें मुंबई से पधारे स्व प्रबंधन विशेषज्ञ प्रो. बीके ईवी स्वामीनाथन ने कहा कि हम अपना सोशल स्टेटस, फाइनेंसियल स्टेट्स, फिजिकल स्टेट्स, इन सब का ख्याल रखना नहीं भूलते है पर अपना मेंटल स्टेटस कैसा है यह ध्यान कम रख पाते हैं। हमारा पहला लक्ष्य अपने मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखना जरुरी है। आईसीएआई के चेयरमैन सीए कमल वलेचा, सेक्रेटरी सीए चांदनी आहूजा और सेवाकेंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी विमला दीदी, बीके विकास भाई ने भी विचार व्यक्त किए।

## नई राहें

**बीके पुष्पेंद्र, संयुक्त संपादक**
शिव आमंत्रण, शांतिवन

### दुआओं का बैंक बैलेंस

**शिव आमंत्रण, आबू रोड (राजस्थान)।** जब जीवन में कोई भयानक आपदा-विपदा या परेशानी आती है, सांसों की डोर उखड़ने को आतुर होती है, सभी प्रयास विफल हो जाते हैं और जीवन-मरण के बीच जिंदगी की पतवार जूझ रही होती है तो सभी के मुंह से एक ही शब्द निकलता है कि अब 'दुआ' कीजिए। दुआ कब इब्तिदा बनकर नई रोशनी दे जाती है ये हम सभी ने महसूस किया और देखा है। सवाल ये है कि क्या कभी हमने सोचा है कि आखिर दुआ करने के लिए ही क्यों कहा जाता है? आखिर दुआओं में ऐसी क्या ताकत होती है जो नियति को भी बदल देती हैं? दुआओं से दामन क्यों खाली नहीं रहना चाहिए? जीवन में सबकी दुआएं लेना क्यों जरूरी है? बड़े-बुजुर्गों की दुआएं कैसे आशीष बनकर हमारी जिंदगी की दशा और दिशा बदल देती हैं? क्या हमने इन दुआओं का बैलेंस अपने एकाउंट में जमा कर रखा है? क्या हम रोजमर्रा के जीवन में अपने बोल, आचरण, कर्म और व्यवहार से दुआओं की पूंजी जमा कर रहे हैं? या फिर बद्दुओं से अपने दामन को काजल की कोठरी बनाते जा रहे हैं? क्या दुआओं का बैलेंस इतना है जो घोर अंधेरे में भी उजाले की किरण बनकर रास्ता दिखाती रहें? बेहतर जीवन जीने की कला से जुड़े ये वो सवाल हैं जो हम सभी को अपने अंतर्मन की गहराई से जानना, समझना और मंथन करना बेहद जरूरी है। क्योंकि दुआएं उस परवर्दीगार, खुदा, ईश्वर के पास सीधे पहुंचती हैं।

#### परमात्मा पिता की दुआएं सबसे अहम...

हम देखते हैं यदि बच्चे ने छोटा सा भी काम कर दिया तो मात-पिता खुश होकर दिल से दुआएं देते हैं। वहीं बच्चा सिर्फ मात-पिता का गुणगान करते रहे आप तो बहुत महान हो, बहुत अच्छे हो, दुनिया के सबसे अच्छे मात-पिता हो, आप मेरे लिए आइडियल हो। दूसरी ओर बच्चा मात-पिता का कहना नहीं माने, उनके अनुसार नहीं चले, हमेशा उनकी श्रीमत के विपरीत ही कर्म करे तो क्या अपने ऐसे बच्चे से मात-पिता खुश होंगे? इसी तरह हम भी रोज भजन-पूजन, आरती और जप-तप, मंत्र-साधना के माध्यम से उस ईश्वर का दिन-रात महिमामंडन करते हैं, बड़ी-बड़ी उपमाएं देते हैं, आराधना करते हैं लेकिन उसकी एक नहीं मानते। न ही उसकी बताई श्रीमत पर चलते हैं। सदा अपनी ही मनमानी करते हैं। सवाल ये है कि क्या ऐसे में परमात्मा खुश होंगे? क्या उनकी दुआओं की रहमत बरसेगी? इन बातों का गहराई से मंथन-चिंतन करने की जरूरत है।

#### बैंक बैलेंस की तरह होती हैं दुआएं...

हम सभी को अनुभव है कि जब हम किसी व्यक्ति को आपदा में होने पर उसकी मदद करते हैं तो बदले में वह हजारों दुआएं देकर जाता है। ये दुआएं हमारे पुण्य के खाते में उस बैलेंस की तरह होती हैं जिसे हम कभी भी कैश कर सकते हैं। जैसे हम जीवन में आपातकाल स्थिति के लिए बैंक एकाउंट में बैलेंस बनाकर रखते हैं, ताकि जरूरत के समय कभी भी निकाल सकें। इसी तरह यदि हमारे एकाउंट में दुआओं का खजाना जमा होगा तो वह हमें आपदा के समय ढाल बनकर सामने आ जाती हैं। इस खजाने को हम रोजाना आसपास के लोगों, परिजन, मित्र-संबंधी, सहपाठी, सहकर्मी या किसी अनजान राही के द्वारा अपने कर्म, व्यवहार, सोच और सहयोग से नित जमा करते हुए बढ़ा सकते हैं। यदि शुभभावना-शुभकामना की दुआएं जमा कर रखी हैं तो इनकी शक्ति हमें परेशानी और समस्या के समय आत्मबल प्रदान करती है। फिर वो आपदा पहाड़ से रुई के समान बन जाती है।

#### बद्दुआएं चक्रवृद्धि ब्याज सहित वापस आती हैं...

दूसरी ओर यदि हमने जीवन में अपनी सोच, कर्म और व्यवहार से बद्दुआओं को जमा किया है तो छोटी सी आपदा कब बड़ी बन जाती है इसका हमें आभास नहीं होता है। साथ ही ये हमारे पुण्य के खाते को खत्म करते हुए एक दिन जीरो और फिर माइनस में लाकर खड़ा कर देती हैं। फिर हम कितनी भी मेहनत, परिश्रम के साथ किसी कार्य को अंजाम दें लेकिन बद्दुओं की ब्लैक एनर्जी हमारी सफलता में बाधक बनकर खड़ी हो जाती है।

#### जीवन का मूलमंत्र हो.... दुआ दो, दुआ लो

जीवन लक्ष्य हो कि हमारे कर्मों से सदा दूसरों को खुशी, आनंद और सुख मिले। वाणी दूसरों में उत्साह और उल्लास भरने वाली हो। सामर्थ्य अनुसार दूसरों की मदद का भाव सदा हृदय में आलोकित रहे। जीवन में प्राणी मात्र के प्रति दुआ देने का मूलमंत्र बना लिया तो फिर देखिए कैसे चक्रवृद्धि ब्याज सहित दुआओं का खजाना आपकी जीवन बगिया को महका देगा। इस सबमें महत्वपूर्ण हम अपनी भावी पीढ़ी को ऐसे संस्कार दें कि वह इनकी कीमत को बखूबी समझ सकें और अंगीकार कर जीवन पथ को नई ऊंचाइयों के शिखर पर ले जा सके। 'दुआ दो, दुआ लो' के मूलमंत्र को जिस दिन अंतर्मन की गहराई से मानस पटल पर अंकित कर दिया तो जीवन खुशियों से महक जाएगा। दुआओं की चादर तले काली छाया दबकर जीवन को स्वर्णिम काल बनाकर जगमगा देगी।

जीवन प्रबंधन

**राजयोगिनी बीके शिवानी दीदी,**
अंतरराष्ट्रीय प्रेरक वक्ता,
गुरुग्राम, हरियाणा

# विचारों के ट्रैफिक कंट्रोल से मन होगा नियंत्रित

**शिव आमंत्रण, आबू रोड/राजस्थान।**

मन पर नियंत्रण करने के लिए मेडिटेशन ट्रैफिक कंट्रोल का अभ्यास करें। हर घंटे के बाद एक मिनट रुकें और अपने विचारों की जांच करें। इससे दिमाग को अगले घंटे के लिए तैयार करने में मदद मिलती है। खुशी मन की एक अवस्था है। लेकिन आज हम मानते हैं कि खुशी वह है जो हम हासिल करते हैं या जो हम खरीदते हैं, वह बाहरी स्थितियों और उपलब्धियों पर निर्भर हो गया है। सच तो यह है कि खुशी हमारा स्वभाव है। जब मन शांत और स्थिर होता है तो वह स्वस्थ अवस्था में होता है और मन का स्वास्थ्य ही खुशी है। मन की स्वस्थ स्थिति में रहना हमारे हाथ में है। उदाहरण के लिए यदि मैं ट्रैफिक जाम में फंस गया हूं, तो मैं तनाव पैदा करना या स्थिर रहना चुन सकता हूं। जब चीजें मेरे अनुसार नहीं होती तो मैं चोट लगने या स्वस्थ रहने का विकल्प चुन सकता हूं।

## लोगों पर ही दोषारोपण न करते रहें, खुद को चेक करें-

खुशी एक स्वस्थ मन है। जब मन आरामदायक स्थिति में होता है तो यह अशांत मन के विपरीत होता है। मेरे लिए यह मायने रखता है कि दिन की हर स्थिति में मेरी मानसिक स्थिति कैसी है। आइए, मैं समझाता हूं क्यों। जब मेरे दिमाग का ग्राफ नहीं बदलता तो मैं दिनभर खुश रहता हूं। उतार-चढ़ाव से, मेरा मतलब है कि एक पल उत्साहित होना, दूसरे पल उदास महसूस करना। वास्तव में खुश रहने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि आप दोषारोपण का जीवन जीना बंद कर दें। इससे मेरा तात्पर्य अपनी स्थिति के लिए लोगों और परिस्थितियों को दोष देना है। लोगों को दोषारोपण का खेल भावनात्मक निर्भरता दर्शाता है। लोगों पर ही दोषारोपण ना करते रहें, खुद को चेक करें। अपने स्वयं के विचार, भावनाएं बनाना और किसी भी निर्भरता से दूर रहना एक खुशहाल जीवन की ओर ले जाएगा।

## मानसिक शांति, सुख और सफलता का आधार कैसे बने-

मानसिक शांति को सुख और सफलता का आधार बनाने के लिए व्यक्ति को मेडिटेशन अभ्यास के साथ आत्म-समर्पण, सकारात्मक सोच और सामाजिक सुदृढ़ता बनाए रखना आवश्यक है। सबसे पहले, आत्म-समर्पण के माध्यम से, व्यक्ति को अपने लक्ष्य और समर्पण के प्रति समर्पित रहना चाहिए। कर्तव्य के साथ-साथ, साहस और परिश्रम के माध्यम से सामना करने की क्षमता भी विकसित होती है। इसमें सकारात्मक सोच का महत्वपूर्ण योगदान होता है। परिवार, मित्र, और समुदाय के साथ अच्छे संबंध विकसित होने से भी मानसिक सुख बढ़ता है। शांति, सुख, और सफलता हमारे जीवन के महत्वपूर्ण पहलू हैं जिन्हें प्राप्त करने के लिए हमें विशेष खुद पर ध्यान देना चाहिए। ये सब एक स्वस्थ और मजबूत, सकारात्मक स्थिरता और आत्मविश्वास का सामना करने की क्षमता के साथ आते हैं। सबसे पहले तो, स्वास्थ्य का ध्यान रखना बेहद जरूरी है।

## सफलता के लिए सही लक्ष्य तय कर सही दिशा-निर्देश में काम करना जरूरी है-

नियमित शारीरिक उपचार, योग और प्राणायाम के माध्यम से हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं, जो मानसिक तंत्र को भी सकारात्मक दिशा में प्रेरित करता है। खुद के साथ जो जैसा है उसे स्वीकार करना, अपने कौशल पर विश्वास करना सफलता की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करता है। सही लक्ष्य तय कर सही दिशा-निर्देश में काम करना जरूरी है। यदि हम अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक कदमों का पालन करते हैं, तो सफलता अवश्य मिलेगी। सफलता के लिए हमें कई बार विघ्न और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन अगर हम खुद पर विश्वास बनाए रखते हैं और अपने मार्ग पर दृढ़ता से बने रहते हैं, तो अंततः हम सफल होते हैं। इस प्रकार, स्वस्थ शारीरिक और मानसिक मनोवैज्ञानिक, सकारात्मक लक्ष्य, सही लक्ष्य का चयन और निष्ठापूर्ण प्रयास से हम मानसिक शांति, सुख और सफलता का आधार तैयार कर सकते हैं।

## जब कोई डांटे अपमान करे तो क्या करें-

यदि आपसे कोई अभद्र व्यहार करता है, तो ऐसे में आप शांत रहें। गलत व्यवहार करने वाले अशांत हैं, रोगी हैं, इसलिए अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहते हुए मन की स्थिति को न बिगाड़ें। अपमान का सामना करना कभी-कभी कठिन हो सकता है, लेकिन समझदारी, संयम से समाधान करना महत्वपूर्ण है। यदि कोई गलत व्यवहार करता है, तो सबसे पहले शांत रहने का प्रयास करना चाहिए। घमंड-गुस्सा करने से बेहतर है कि आप स्थिति पर बने रहें और विचार-विमर्श से प्रतिक्रिया करें। सबसे पहले, आपको अपनी सुरक्षा पर ध्यान देना चाहिए। यदि संभावना है कि बातचीत से बात बन सकती है तो धीरे से बात करें। विवाद को बढ़ावा देने से बेहतर है कि आप दूर रहें, स्थिति मजबूत बनाए रखें।

# ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाएं सराहनीय: राजदूत कपूर

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पहुंचे रूस में भारत के राजदूत पवन कपूर को ब्रह्माकुमारी बहनों ने परमात्म रक्षासूत्र बांधा, पुष्पगुच्छ से किया स्वागत।

**शिव आमंत्रण, मॉस्को (रूस)।**

ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र पर परमात्म रक्षासूत्र कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बहनों ने एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में रूस में भारत के राजदूत पवन कपूर, धर्मपत्नी आराधना शर्मा के साथ पहुंचे। उन्होंने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस दौरान उनके साथ काउंसलर प्रथम सचिव दीपक गौरी, द्वितीय सचिव फुरपा त्सेरिंग मौजूद रहे।

कार्यक्रम में राजदूत पवन कपूर ने कहा कि रूस में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लोगों को अध्यात्म का संदेश दिया जा रहा है जो सराहनीय है। संस्थान द्वारा मानव कल्याण के लिए सेवाएं की जा रही हैं। रूस और पड़ोसी देशों में ब्रह्माकुमारीज की निदेशिका बीके चक्रधारी दीदी ने समय की पुकार - विश्व की शुद्धि' विषय पर संबोधित करते हुए कहा कि आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। ब्रह्माकुमारीज विश्वविद्यालय पारंपरिक भारतीय त्योहारों के गहरे महत्व और देवी-देवताओं के अर्थ को समझाता है। विश्वविद्यालय का एक उद्देश्य है

व्यक्ति का चरित्र निर्माण, नर से श्रीनारायण, नारी से श्रीलक्ष्मी के समान बनना। मयक मीरा को छोड़ने से पहले राजदूत कपूर ने अपनी भावनाएं ओपिनियन बुक में लिखीं।

उन्होंने लिखा कि रक्षाबंधन पर आज इस केंद्र का दौरा करना बहुत सम्मान और खुशी की बात थी। मैं यह देखकर बेहद प्रभावित हुआ कि ब्रह्माकुमारीज इस केंद्र को कैसे चला रही हैं। सुधा दीदी और चक्रधारी दीदी से मिलकर विशेष रूप से सम्मानित महसूस किया। हम, भारतीय दूतावास में, हर संभव तरीके से केंद्र के प्रयासों का समर्थन करने के लिए तत्पर हैं।

## राजयोग मेडिटेशन से कराई शांति की गहन अनुभूति-

मॉस्को सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके सुधा दीदी ने राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताते हुए कहा कि इससे माइंड की पावर बढ़ जाती है। साथ ही सभी को राजयोग अभ्यास के माध्यम से गहन शांति की अनुभूति कराई। सबसे पहले मेहमानों को रूसी परंपरा के अनुसार पारंपरिक ब्रेड (करवई) पेश की गई। स्वागत गीत-संगीत और फूलों से किया गया। वेलकम... वेलकम... वेलकम... हम लंबे समय से आपका इंतजार कर रहे हैं.. ने सभी को भावविभोर कर दिया।

## रक्षाबंधन मूल्यों के बंधन का प्रतीक है: बीके कुसुम दीदी

**मिलपिटास/सिलिकॉन वैली (यूएसए)।** ब्रह्माकुमारीज सिलिकॉन वैली द्वारा भारत के महावाणिज्य दूत डॉ. श्रीकर के. रेड्डी उनकी पत्नी, प्रतिमा रेड्डी का सम्मान किया गया। साथ ही मुख्यालय माउंट आबू से पहुंची परमात्म राखियां बांधकर शुभकामनाएं दीं और मुख मीठा कराया। कार्यक्रम मिलपिटास के इंडिया कम्युनिटी सेंटर में आयोजित किया गया। ब्रह्माकुमारीज की बीके कुसुम दीदी ने रक्षाबंधन का महत्व बताते हुए कहा कि राखी पर्व पवित्रता का संदेश देता है। यह बंधन मूल्यों के बंधन का प्रतीक है। कार्यक्रम में महापौर व परिषद सदस्यों ने भी भाग लिया।

## परमात्मा के प्रेम के बंधन में बंधना ही सच्चा रक्षाबंधन है

**यूक्रेन।** ब्रह्माकुमारीज के संगम रिट्रीट सेंटर (एसआरसी) में रक्षाबंधन पर आयोजित कार्यक्रम में बीके सदस्यों का स्वागत किया गया। इसमें बीके सुधा दीदी ने कहा कि हम सबने सर्वशक्तिमान बाबा को अपना बना लिया है। सर्वशक्तिमान बाबा ने हमें भी अपना बना लिया है। तो अब हम आपसी प्रेम के बंधन में बंध गए हैं। यही सच्चा रक्षाबंधन है। सुबह मुरली के बाद सभागार में बाबा का ध्वज फहराया गया।

## प्रदर्शनी से दिया अध्यात्म और सद्गुण अपनाने का संदेश

**लातविया/ बाल्टिक राज्य (मास्को)।** शहर की 738वीं वर्षगांठ पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें ब्रह्माकुमारीज की ओर से लातवियाई भाषाओं में ज्ञान और सद्गुणों के चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके माध्यम से परमात्मा की सत्य पहचान, राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताया गया। लातवियाई सेवाकेंद्र की बीके रीगा ने लोगों को जीवन में राजयोग के फायदे और विधि के बारे में बताया।

RNI No.: RAJHIN/2013/53539, Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2021-23. Posting at Shantivan- 307510 (Abu Road)
Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2021-23, Posting on 17 to 20 of Each Month, Published on 14 Sep. 2023
» स्वामीः राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन » प्रकाशक, संपादक व मुद्रकः ब्र.कु. कोमल द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित » संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र